आभा झा

आवासीय पता:
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6
सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029

संपर्क:
9871053391

ई-मेल:
abhajha15@gmail.com

कार्यालयीय पता :
गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय
ग्रीनपार्क, नई दिल्ली-11001

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., बी.एड., साहित्याचार्य
जन्म तिथि : 15-05-1966
वृत्ति : 9 सितम्बर 1994 सँ दिल्ली सरकार मे बतौर संस्कृत शिक्षक कार्यरत। सम्प्रति गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क मे संस्कृत प्रवक्ता (पी.जी.टी.) क पद पर आसीन।

संस्कृतमे प्रकाशित कृति-
व्याकरण-वैभवम्, भाग-1 (कक्षा-5)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-2 (कक्षा-6)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-3 (कक्षा-7)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-4 (कक्षा-8)

हिन्दीमे प्रकाशित कृति-
झड़ते फूल (काव्य-संग्रह) 2021 ई.

मैथिलीमे प्रकाशित कृति-
कने हमरो सूनू (काव्य-संग्रह) 2020 ई.
प्रतीक्षा (कथा-संग्रह) 2020 ई.
सिनेहक दाम (बिहनि कथा-संग्रह) 2020 ई.
चिनबार (काव्य-संग्रह) 2021 ई.
आलोचनाक वातायन (आलोचना) 2022 ई.
हम, अहाँ आ मैथिली (आलेख-संग्रह) 2023 ई.
सीताक स्वर (श्रृंखलाबद्ध काव्य) 2023 ई.
बजितथि जँ उर्मिला (कविता-संग्रह) 2024 ई.

संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली भाषा मे कथा कविता, लघुनाटक, आलोचना आदि विभिन्न विधाक साहित्य रचनामे प्रवृत्त। विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे हिन्दी आ मैथिली मे कविता, कहानी, आलोचना आदि प्रकाशित। संस्कृत अकादमी सँ अनेक शोध निबंध, कथा, लघु नाटक, श्लोक आदि प्रकाशित। 1999 ई. सँ एनसीईआरटी आ एससीईआरटी मे रिसोर्स पर्सनक रूपमे विभिन्न पाठ्यपुस्तक, व्याकरण पुस्तक आ शिक्षक संदर्शिका-लेखन मे योगदान। 2000 ई. सँ शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा शिक्षक सभक हेतु आयोजित क्षमता सम्वर्द्धन कार्यशाला मे रिसोर्स पर्सनक दायित्व निर्वहण।

ISBN 978-81-986846-9-1

मैत्रेयी प्रकाशन
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
ई-मेल : maitreyipublication@gmail.com

9 788198 684691

मूल्य : ₹ 250/-

ध्यान धरु सदानीरा

आभा झा

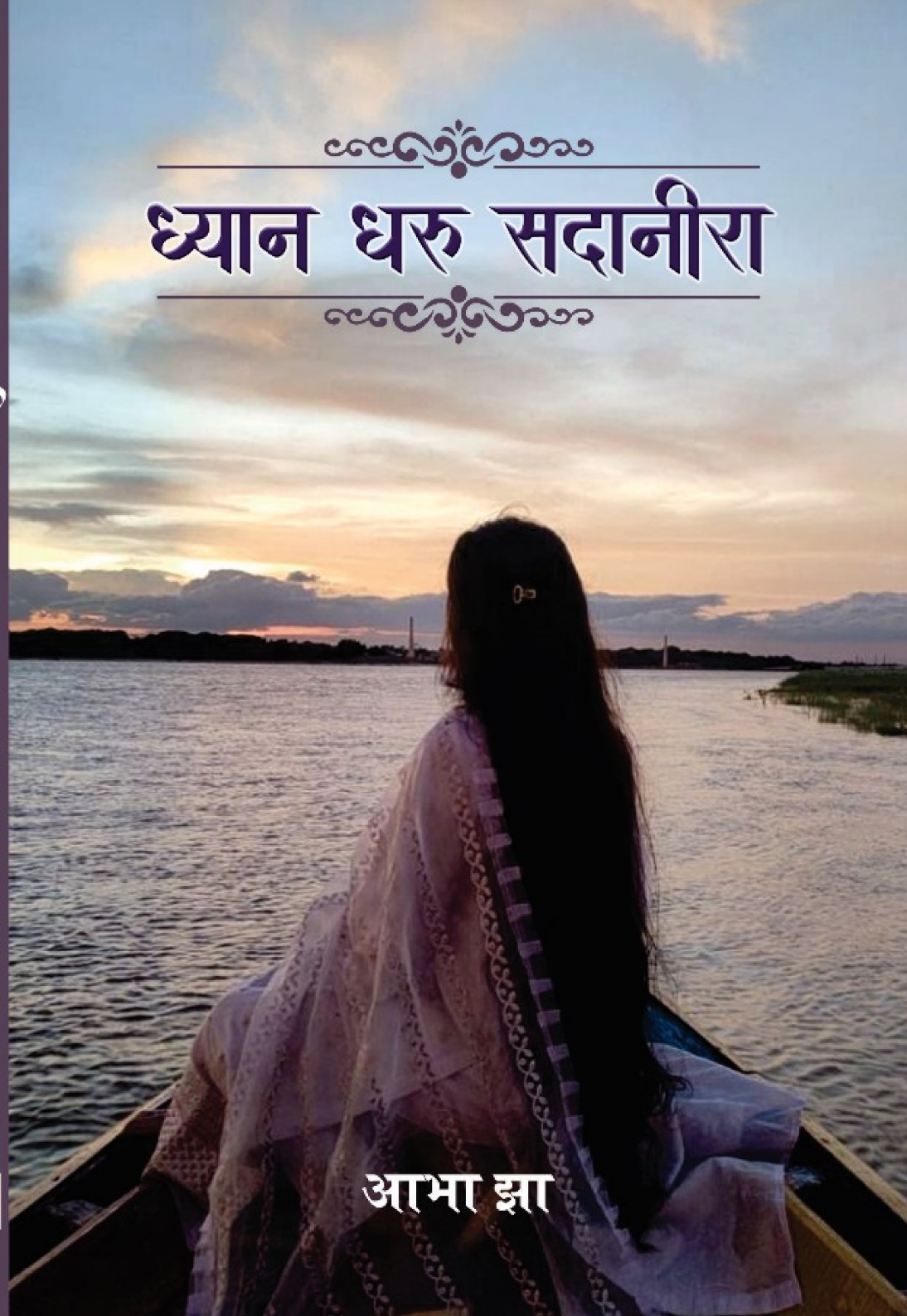

ध्यान धरु सदानीरा

आभा झा

ध्यान धरू सदानीरा

ध्यान धरू सदानीरा

आभा झा

मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली

ध्यान धरू सदानीरा

कवयित्री : **आभा झा**
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6, सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029
सम्पर्क : 9871053391
ईमेल : abhajha15@gmail.com

ISBN : .....

प्रकाशक : **मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली**
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
संपर्क: 9431693352
ईमेल: maitreyipublication@gmail.com

© : **आभा झा**

प्रथम संस्करण : **2025**
मूल्य : **₹ 00**

कला संपादन : **मणिशंकर कुमार**
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

मुद्रक : **आर.के. ऑफसेट प्रोसेस**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Dhyan Dharu Sadanira by Abha Jha
First Edition : 2025, Price : ₹ 00

समर्पण

वैचारिक प्रगति आ उपादेय परम्पराक समन्वयक
आग्रही समस्त पाठकसमवायकें
सादर
आभा झा

अनुक्रम

प्राक्कथन **11**

1. कजरी 15
2. साँप 17
3. पूर्णिमाक बाट तकैत... 20
4. स्वतंत्र छी प्रेम करबा लेल 23
5. हिरदय 25
6. न्यूरोटिक 27
7. एनीस्थीसिया 31
8. ध्यान धरू सदानीरा 34
9. दोसर शीला 37
10. परिधिसँ मुक्त 40
11. सेल्युलर जेल 43
12. चमेटा 45
13. अपना दम पर 49
14. इज्जतिक बटखरा 52
15. वसुधा-माधवी 55

16. बोनस 58

17. कपूतक प्रायश्चित्त 61

18. मत्स्यकन्याक न्याय 64

19. आश्वस्त खाढ़ीकेँ स्वस्ति 67

20. धोबिया पाट 70

21. वर्चस्व 72

22. बाबूजी बूढ़ भ' गेलखिन 74

23. पुरना रंग 76

24. स्तब्ध 79

25. ममत्व 81

26. की निन्न टूटल? 83

27. अहीं त' छी मूलमे 86

28. गरलक ग्रास 90

29. विनाशक पजेबा जोड़ैत गांधारी 93

30. बजार 95

31. रक्तबीजक भय 97

32. सपूत 99

33. मिसिया भरि ज्योति 103

34. धोन्हि 106

35. बिरथा 107

36. लोकल 109

37. पानि 112

38. खेला 114

39. असिधार 116

40. बखिया 117

41. अगम प्रकृति 118

42. मैथिल 119

43. कुपोषण 121

44. जुनि छोड़ू कसरि लव 122

45. प्रकृति 124

46. युवजन! बजबह नव रणभेरी 125

47. मन मोर 127

48. ताण्डव 128

49. विवशता 129

50. चेतौनी 130

51. नागिन 131

52. रहब पुनि एकठामे 132

53. आस्था 133

54. बुद्धि 135

55. स्त्रीसँ स्त्रीक गप 136

56. अनुदान 138

57. छगुन्ता 140

58. खिस्सा 142

59. बेन 145

60. खंजर 147

61. लघुदीप 149

प्राक्कथन

प्रज्ञा प्रकाशदा वाणी वाचि प्राणं प्रबोधयेत्
लोकप्रबोधनं येन मम वाचाऽपि सम्भवेत्।

सामान्य बोलचालक माध्यमक रूपमे कोनो भाषाक जतेक महत्त्व होइत छैक ओहिसँ बेशी साहित्यिक धरोहरिक रूपमे । कारण ई धरोहरि पीढ़ी दर पीढ़ी लोकक मार्गदर्शन करैत रहैत छैक।कोनो भाषामे लिखल साहित्य जँ काल स्थान निरपेक्ष जनचेतनाक उन्नायिका हो आ सामाजिक समरसताक सदानीरा हो त' ओ साहित्य सार्वकालिक महत्त्व रखैत अछि।एहि तरहक साहित्य सभ भाषामे अछि मुदा ओकर संख्या सर्वत्र अल्पे। मुदा सार्वकालिकताक संगहि तात्कालिक परिस्थितिक प्रभाव सेहो साहित्य पर पड़ैत छैक, जे पड़बाको चाही।जखन साहित्यकेँ समाजक ऐना कहैत छियै त' ओहि ऐनामे नीक-बेजाय, कुरूप-सुरूप सभ यथार्थ आयब स्वाभाविके। हँ नीक साहित्यकार अवश्य एकटा माँजल ब्यूटिशियन जकाँ केहनो चेहराकेँ दर्शनीय बना दैत छथिन, कटु-कठोर यथार्थोक सुरुचिपूर्ण वर्णन, सुंदर बिम्बोपस्थापन आ प्रस्तुति- भङ्गिमासँ रमणीय बना दैत छथिन । पाठक ओहन साहित्य पढ़ि झूमि उठैत अछि। तेँ साहित्य आवश्यक अछि स्वयंकेँ चिन्हबा लेल, समाजकेँ बुझबा लेल, विभिन्न तरहक चिन्तनक बसातसँ मन-प्राण शीतल करबा लेल आ बुद्धिक उत्कर्ष आ भावना- संवेदनाकेँ जिया कए रखबा लेल।

एहि बीच, विशेषतया मैथिल बुद्धिजीवी समवायमे ई चिन्ता बढ़ि गेलै अछि जे मैथिलीमे कविता-लेखनक बाढ़ि आबि गेल अछि आ ओहि बाढ़िमे उर्वरतत्त्वक तुलनामे अनुर्वर काँट-कुश बेशी आबि गेल अछि।तेँ कविकेँ सोचबाक चाही जे ओ कियै लिखैत छथि, ककरा लेल लिखैत, की समाजोपयोगी लिखैत छथि अथवा तात्कालिक महत्त्वक कविता लिखैत छथि, भावनाक अनियन्त्रित उद्गार किंवा बौद्धिकताक नीरस आख्यान लिखैत

छथि? एहि तरहक चिन्ता हमहूँ यत्र- तत्र देखैत- सुनैत आबि रहल छी मुदा एकहुटा चिन्ताक निवारण संभवतः हमर एहि संग्रहमे स्पष्ट रूपसँ लक्षित नहि होयत। जँ सत्य पूछी त' हम एहि तरहक कोनो कसौटी सोझाँ राखि कविता लिखबामे प्रवृत्ते नहि होइत छी।मनुक्ख छी, तेँ संवेदना सहजे।जे कोनो घटना वा पठित पात्र हमरा मनकेँ उद्वेलित करैत अछि, हम लेखनी धय ओकरा अभिव्यक्ति देबा लेल विवश भए जाइत छी। जरूरी नहि जे हम कविते टामे अपन मनक आलोड़न अभिव्यक्त करी, जखन जे विधा उपयुक्त बुझायल, ओहि दिसि अपन बुद्धिक सीमामे बढ़ि जाइत छी।तेँ कथा कि निबन्धादिक लेखनमे सेहो हमर प्रवृत्ति देखल जा सकैछ।हमर एहि तरहक उद्यम कतेक लोकोपयोगी बनि पेतै, ई प्रश्न हम समय पर छोड़ैत छी ।ओहिनो साहित्य रुचिक चीज थिकै।जाहि कोनो पाठकक रुचि हमरासँ कनियों मेल खेतै, ओ पोथी पढ़तै, जकर नहि, ओ एक बेर देखि ध' देतै । ई हमर चिन्ताक विषय नहि थिक आ हमरा हिसाबेँ कोनो लेखकक नहि होयबाक चाही।

एकटा गप आओर! महिला लेखनमे स्त्रीवादी दृष्टिकोणक अन्वेषण जानि वा अनजान लोक करिते अछि । मुदा हमर मन्तव्य ई जे स्त्री प्रथमत: एकटा मनुष्य अछि, तेँ ओकर लिखल साहित्यमे मनुष्यता अवश्य भेटबाक चाही। स्त्री होयबाक कारण देखल- भोगल कटुताक अभिव्यक्तिक संग संपूर्ण मानव समाज लेल काम्य स्थितिक कल्पना- अवधारणा अवश्य लेखनमे अयबाक चाही। स्त्री आ पुरुष प्रतिद्वंद्वी रूपमे नहि अपितु पूरक रूपमे समाजक भ'ल कए सकैत अछि, जँ ई तथ्य बिसरा गेल त' जीवन आ लेखन दुहू निष्फल अछि। एक पक्षक गलतीक बोध करायब जरूरी, मुदा प्रतिकारमे जँ दोसर पक्ष गलतिए पर उतरि जाय त' सामाजिक समरसता लेल बहुत पैघ खतरा भए सकैछ, ई बूझब जरूरी।

अस्तु, आब अन्तमे एहि संग्रहक कविताक संबंधमे किछु शब्द! कविता-प्रस्तुति क्रममे हम छन्द-बन्धक आग्रही नहि छी, एहिमे कुशलो नहि छी, मुदा एहिसँ पूर्व प्रवाहक रक्षणीयताक प्रति साकांक्ष रहैत अयलहुँ अछि। एहि बीच आधुनिक रुचि-प्रवृत्ति आ कविताक अद्यतन धाराक अनुगमन करैत हम किछु नव कविता सेहो लिखलहुँ अछि आ से एहि संग्रहमे प्रारम्भमे समाविष्ट

कएलहुँ अछि। ई नव प्रयोग सफल भेलै वा असफल, ई त' विज्ञ पाठक लोकनिक अधिकार-क्षेत्र छनि। हुनक मन्तव्य आ दिशा-निर्देशक अपेक्षा त' सहजहिँ।

त' नव आ पुरानक, तुकान्त आ अतुकान्तक, परम्परा आ आधुनिकताक, विचार आ भावक ई काकटेल लय उपस्थित छी। अहाँ लोकनिक स्नेह जँ भेटत, कृतकृत्य बूझब।

भावक बगान बुलि कए किछु फूल लोढ़ि अनलहुँ
अर्पित करक निमित्ते सहृदय दुआरि अयलहुँ
प्रिय अर्क पुष्प शिवकेँ जाहिमे न गन्ध वा रस
ओहने कृपा भरोसे किछु काव्य-माल्य रचलहुँ।

– आभा झा

कजरी

बरहम थान, पीपरक गाछ
आ खुट्टामे बान्हल चारिटा छागर
चारू कात रोपल गाछ-पात
पात खुआ आनन्दित होइत बालक !

आइ एकटा छागर
भगवतीक सीर पर
दोसर पीपरक जड़िमे
हबोढकार कानि रहल कोमल-हृदय बच्चा
ओ किन्नहुँ भगवती-घर पाएर नहि देतै
मुदा बौआक कनने-खिजने की
ई त' रीत छैक, ई कोना नहि हेतै !

मुदा हाय रे मेष!
कतेक निर्बुद्धि !कतेक विश्वस्त!
सत्ते अज्ञान सन वरदान की ?
एकटा आंखिक सोझाँ एखने गेलै वैकुण्ठ,
दोसर!
एखनो बौआक हाथसँ
कनेरक पात खा रहल अछि !
बौआ छै अबोध, मेष जड़बुद्धि
मुदा चारू दिशि कजरी लागल,
भत्थल, गन्हाइत पोखरि
कुमरम लेल क'लक बाल्टी भरल ज'ल !

सभ टा देखैत, निर्द्वन्द्व, निर्लिप्त
पात पर बोटी नेने
कातमे अवशेषक ढेर लगौने
ढकरैत सभ्य लोक
कए रहलाह
तत्त्व आ मीमांसाक, अद्वैत आ द्वैतक
बड़का बड़का गप !

हम मूढ़
देखितो नहि देखै छी, बुझितो नहि बूझै छी
अन्हरजाली जेना मोटा रहल अछि
मोनो की कहलमे ?
सदिखन संशय होइयै
कजरी पोखरिमे छै लागल किंवा कतौ अन्त: ?

साँप

परिस्थिति बदलल अछि, ई मिथ्या त' नहि
स्त्री -पुरुष- समता
गप्पे टा मे नहि
यथार्थोमे देखाइ दैत अछि !

बेटी सभ सपना देखैत अछि
सपना साकार करैत अछि
जेट प्लेन उड़बैत अछि
अंतरिक्षमे जाइत अछि
ग्रह ओ उपग्रहक गीरह
चुटकीमे सोझरबैत अछि।

घ'र मजगूत बनबैत अछि
सौखसँ चीज-बौस्त किनैत अछि
होटल, सिनेमा ओ टूर पर जाइत अछि
आ हँ,
माय-बापक बुढ़ापाक
लाठिओ बनैत अछि।
मुदा
एकटा चीज नहि बदलल
ओ थिक स्त्रीक देह!
बदला लेबा लेल
गारि देबा लेल

भोगबा लेल
गिद्ध सभक सोझाँ परसबा लेल
बड़ सुभीतासँ
देहक उपयोग आइयो भए रहल अछि।

सभ्य लोक सभ !
दु: शासनकेँ गारि देब बन्न करू
रावणकेँ जरायब सेहो..

कहिया धरि अपन कमजोरी
प्रतीकसँ झँपैत रहब?
कहिया धरि रेस्तराँ वा बारमे
काज करैत लड़कीकेँ गरिअबैत
ओकर चरित्रक प्रमाणपत्र
बँटैत रहब ?

आ एकटा बात कहू
मोमबत्ती जरौनाइ सेहो
बन्न करू
ओहि क्षीण सनक इजोतमे
जुगुप्सा जगबैत नग्नता
चिचिआइत पशुता
रोइयाँ भुलकबैत निर्ममता
मनुष्यता पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत अछि !

अहाँक गप पर भरोस?
बहुत साल पहिने बाबा भारती
खड्गसिंहसँ इयैह कहने छलाह

घोड़ा जरूर ल' ले
मुदा ककरो कहियही नहि
दीन- हीन बनिकए तों
धोखा देने छही मदति करय बलाकेँ !

आइयो कहैत छी
पशु छी, त' खुलि कए पशु बनू
आयब रणचण्डी बनि
दर्प दमित करब
अहाँक अपवित्र रक्तक एक- एक बूँद चूसि
शक्तिहीन कए देब छनहि मे !

मुदा ई प्रेमक छल
मनुष्यताक देखौंसी
सज्जनताक पहिरन !

ओह! एत्तहि त' हारि जाइत छी
सत्य कहू, चाहियो कए
भरोस नहि कए पबैत छी
अन्हार, घनघोर अन्हरिया..
ससरैत, फुफकारैत
लपलपबैत जीह बला साँप
शरीरेटा नहि
म'नोकेँ विषाक्त बना रहल अछि !

पूर्णिमाक बाट तकैत..

हम निशा
लड़ि रहल छी गुजगुज अन्हारसँ
चहुँदिशि पसरल अतिवादसँ
भोरक प्रतीक्षा नियति बनि गेल अछि!
प्रतीक्षाक दुर्वहता
केओ हमरासँ पूछय !

पिताकेँ विश्वास छल हेतनि
व्यक्तिवाचक नाम गुणवाचक नहि होइछ
तैं नाम रखलनि निशा,
मुदा
भागमे लिखायल भयानक अन्हारे !

माए चलि गेलीह जन्मक संग
पोसलनि पिसियाक मदतिसँ पिता
मुदा एकटा विमाता नेनहि एलाह
कोना एसकर कटितथि जीवन ?
आर्ष वाक्य जकाँ लोक बजैत रहथु
‘कबिरा तिनकी कौन गति, जे नित नारी संग’
मुदा नारीक बिना के जीबि सकैछ भए निस्संग !

एकटा इजोतक किरिन,
कतोक अमावसक बाद आयल
भेल प्रतीक्षाक अंत !

अयलाह प्रखर इजोत बनि रवि
भरि देलनि जीवन फूलक सुगन्धिसँ
पोर- पोर उल्लास आ तृप्तिसँ
छल अल्पायु मुदा सुख
दुपहरक रौद शनै:शनै: समाप्ते होइत छैक
एकटा शिशुक उपहार खोंइछमे
आ रविक चिरकालिक अवसान !

वैधव्यसँ बेशी दारुण छल
अरिजन- परिजनक बदलल नजरि
संबंधक बदलैत परिभाषा,
निर्घृण निदारुण वणिग् वृत्ति
मुदा
हम त' निशा छी ने
एकहकटा किरिन लेल लड़ब हमर प्रारब्ध
ता धरि जा धरि भोर नहि हो !

स्वीकार करैत छी
हमरा नीक लगैत अछि शशिधर
नहि अछि ओ रविक पर्याय, पूरक धरि
अबस्से
ओ अबैत अछि,
क्षीण सन इजोत संग,
रोशनदानसँ अबैत अछि आक्सीजन
बेटाक हिस्सामे दुलार, हमरा लेल आश्वासन
चिरकालिक साहचर्यक ने प्रतिज्ञा आ न
उमेद
मुदा जरूरी बूझि समेटि लै छी ओतबो
ज्योति

जकर भरोस पर खेपि सकी कृष्ण पक्ष
अहाँ बजैत रहू
Frailty thy name is woman
मुदा सत्य ई जे एतेक ताकति अहाँ मे नहि
सहि सकी एतेक विपर्यय, निरन्तर आघात
तैंयों पूर्णिमाक बाट तकैत रही, तकैत रही…

स्वतंत्र छी प्रेम करबा लेल

आठ बाइ आठक छोट सन कोठरी
घरमे हमरा सनक पाँचटा लड़की
प्रान्त नाम उपनामसँ रहित
बाई कहू मेड किंवा महरी !

भोरसँ साँझ धरि खटैत छी
कमाइ छी, भरि पेट खाइ छी
आ घर पर पठबै छी
दस हजार टका
जाहि लेल दुमकासँ बारह सौ किलोमीटर दूर
पठौलनि बाबू बारहे बरिसक उमिरमे !

भूखक ओहि साम्राज्यमे
दलालक महत्त्वो कतेक
सभ अपने बेगरते
पठबै छलै अपन संतान
पाइ जे नहि कराबै
दू मन धानक बदलामे दीदीक सौदा
केओ आन नहि, बापे त' केने छलै !

एतए भरि पेट भोजन भेटैत रहल
काजक बदलामे,
कखनो बिस्कुट केक सेहो

काजे की, जंगलमे दू कोस पाएरे जाक'
झाड़- झंखाड़ चुनैसँ त' नीके !

हँ मुदा पैघ होइसँ पहिनहिँ
बनए पड़ै छै समर्थ,
कखनो दलाल लेल
कखनहुँ मालिक लेल
त' कखनहुँ गार्ड, चपरासी लेल सेहो !

आइ पाँच बरखक बाद !
कोनो बन्हन नहि, केओ मालिक नहि
ककरो कमीशन देबाक खगता नहि
अपन आधार कार्ड, परिचय आ बैंक खाता
ई उपकार दलाल काका कइए देने छल !

आब जीवन अपन अछि
मुक्त छी काज धरबा लेल, छोड़बा लेल
आ अपन पसिन्नक लोकसँ प्रेम करबा लेल
हँ, हम एस्थेर मुर्मू, करनी सोरेन
बेला यादव, जूही आ नीली
स्वतंत्र छी प्रेम करबा लेल !

हिरदय

हिरदय, कतेक सस्त भ' गेल
जाहिमे बसै छलै करुणा, प्रेम किंवा आन-आन भाव
आकृति मात्र रहि गेल
जे- से, जतय-ततय बिलहि रहल
टके पसेरी कीनि छिरिया रहल
मुदा एकटा वयस विशेषे धरि !

शरीरक जाहि खानामे एकर स्थान अछि
ओ मात्र रहि गेल एकटा तिनकोनमा चित्र
जतए सँ बहराइत छैक मात्र शब्द
बहराइते नहि छै, बहल जाइत छैक
गङ्गामे वा नालामे,
ककरो की कोनो पड़ैत छैक फर्क
के सोचैत अछि, ओ मृदु स्पन्दन
कहिया सुखायल, बीति गेल कतेक अब्द ?

ओरे सँ जाहि सत्ताक केन्द्र रहल लाभ
पिता-पुत्र, भाइ-भाइमे होइत संघर्ष
षड्यंत्र, शतरंजक चालि आ अपलाप
बुर्जुआक स्वामित्व आ सर्वहाराक शोषण
सभ स्पष्ट, नहि कतौ झाँपन,
ने शब्दक आडम्बर
मुदा आइ, विषकुम्भ पयोमुखक देखल सबतरि पोषण।

किनसियाति पर्दाक पाछाँ
दून्नूमे भेल हो कोनो मेल
जीवनमे प्रधान
सभ दिन की भावे रहतै ?
मिलल- जुलल सरकारमे
बुद्धिओकेँ देखबए दियौ खेल
मुदा ई की,
एकदिसाहे देखना जाइछ समझौताक क्रीड़ा
वर्चस्व बुद्धिक, प्रगतिक नाम पर
भिन्न-भिन्न रूप धए भकोसि लेलक व्रीड़ा।

हमहूँ कियैक कनैत छी,
की इहो आन्तरसँ बेशी बाह्य नहि ?
बुद्धिक प्रतापेँ धन-मान पबितो
भावनाक मृत्युक मर्सिया गबैत छी।

ओह!
बुझलियै नहि,
मार्केटिंग स्ट्रेटेजी, कहियो की सुनने छी ?
हिरदय आ दिमाग दुहू व्यवसाय भेल
संतुलन साधि हम कविता रचैत छी।

न्यूरोटिक

विद्यालयमे सभ तंग अछि
तेरह बरखक अवनीसँ
उचित नहि तंग होयब
शिक्षक लेल त’ कथमपि नहि
मुदा ओकरहु सीमा छैक, प्राथमिकता छैक
एकटा बच्चा पर
चालीस बच्चाक समयक भाग खर्च होयब
उचित त’ नहि !

एना त’ चलतै नहि
ने नाँव काटब समाधान
ने न्यायसंगत करची कमान !

प्रत्येक बेर बापक निहुरल मूड़ी
लिखल माफीनामाक ढढ्ढर
ओहि घड़ी अवनीक आंखिक चमक
डेरा दै छल हमरा !

बूझल छलै घर जाइते खल्लर ओदाड़ि देतै
मुदा तैं की ?
बापक माथ त’ झुकलै,
एक बेर नहि बेर बेर !
अवनीक आंखिक ओ प्रतिहिंसक चमकि

मोन काँपि उठल
की हेतै एकर ?

काउंसलरकेँ सुपुर्द केलहुँ केस
हँ, अवनी शिक्षार्थी नहि
बनि गेल छल केस !

छ: मास,
पूरे छः मासक मेहनति रंग अनलकै
ओकर मनक बन्न केबाड़ फुजलै
बर्फ पघिलब शुरू भेलै !

सात बरखक छल अवनी
जानि नहि की भेलै
बाप माइक सोझेँ मौसीक बनिक' रहि गेलै !

निर्लज्ज, निस्तरर सन घर ढुकै छल
क्यो रोकनिहार नहि
मायक विरोधक प्रत्युत्तर छलै
लाति गारि मारि !

अन्तहीन पीड़ा मायक
देनहार के?
पति आ सहोदरा !

नहि सहि सकल माय,
मृत्यु स्वयं चुनलक
किंवा भेटलै उपहार के जनै अछि !

नाना- नानी धरि बिसरि गेलथि
जेठकीक पीड़ा
छोटकी पार-घाट जे लागि गेलनि
बिनु दमड़ी खर्च !

मुदा सात बरखक अवनी नहि बिसरि सकल
न मायक विवशता,
ने बापक कृतघ्नता
आ ने मौसीक विलासिता
दुहूकेँ तंग करबाक कोनो अवसर नहि छोड़ै छल !

प्रतिशोध छलै कि रुग्णता
असुरक्षित नेनपन
घाहिल तन मन
माइए जकाँ कए दिअय खतम
कोन भरोस, कखन घेरै अदिनता !

मस्तिष्कमे चलै बवंडर
भाइ बहिनकेँ छौंकि दै
मौसीक साड़ी चीरि दै
बनल चाहमे नून
तरकारीमे मेरचाइ
दूधमे नेबो
ई हिस्सक बनि गेलै
आ तेँ इसकूलोमे तहिना
नहि क्यो संगी न बहिना
मनक मरुस्थलमे एसकरि
बनि गेल न्यूरोटिक !

जे बाप द’ रहलै फीस, मनसँ की बेमन
जँ निमाहितै बापक धर्म
कियै बढ़ितै न्यूरोसिस
कियै जइतै अवनी पढ़बाक बेरमे
चिकित्सालय !

प्रश्न मुदा शेष अछि
न्यूरोटिक की एक्कहि टा अवनी
पिता नहि अथवा मौसी ?

एनीस्थीसिया

रोग ककरा पसिन्न होइछ
मुदा आबिए जँ जाय
त’ इलाज जरूरी होइछ
टेबलेट कैप्सूल, सिरप,
सुइया वा सर्जरी
जे होमय जरूरी !

लोकल एनीस्थीसियामे रोगी बुझैत अछि
घाव चीरल जा रहल
दाँत उखाड़ल जा रहल
खून चढ़ाओल जा रहल
कि खून निकालल जा रहल
धरि दर्द नहि बुझाइ छै तत्काल !

किछु घाव मुदा भ’ जाइ छै सेप्टिक
किछु रोगो होइ छै जटिल
खगता होइ छै शल्यक्रियाक
बाइपास हो, ट्रांसप्लांट हो, एंजियोप्लास्टी
कि रिमूवल आफ आर्गेन्स
तखन पड़ै छै एनीस्थीसिया टोटल
पता नहि चलै छै किछु,
जखन कि होइ छै पूरा उथल-पुथल
एक एक अंगक, एक एक स्नायुक !

भाषा आ संस्कृतिक गप करैत
चिन्तामे बेहाल होइत
छिद्रान्वेषण, वाचिक फुफकार
आलोचना प्रत्यालोचना, निंदा आ प्रशंसाक इंजेक्शन
भए गेल बेअसर
एकटा बिहाड़ि उठि रहल
सफाइ मुदा नहि, निरर्थक खर पतवार टा उपलब्धि !

भाषा थिक नदी
प्रवहमान, उर्वर, सिञ्चन- सामर्थ्य- सम्पन्न
कतबहु बाढ़ि अबौ कि सुखाड़
साहित्यक पौष्टिकता धरतीमे रहबे करतै
ओ चीन्हब जरूरी,
खगताक अनुरूप बहार करब उपयोगी
यत्र तत्र अनावश्यक बाँध
किंवा बेजरूरति प्रवाह
समाजक भ'ल नहिए टा करतै।

संकट भाषाक नहि, संस्कृतिक नहि
रुग्ण संकुचित चिंतनक
स्वयंभू होयबाक दम्भक
जबर्दस्ती लेल ठेकेदारीक
स्वस्थकेँ कृत्रिम प्रोटीन विटामिन खुऐबाक अछि।

एकर दरकारे की
दवाइ- बीरोक खगते किऐक
स्वस्थ रखबाक कोशिश नहि किऐक
संयमित आचार व्यवहारक पालन नहि

कसरत आ भोजनक विचार नहि
स्वयं किछु करबाक ऊहि नहि
मोमो बर्गरक, पिज्जा चाउमीनक लिप्सा
तहिना इंस्टैंट कविता कथाक बाढ़ि
नव नव देवता आ गुरुक पसाहि !

बूझय पड़त अनावश्यक अबाध बढ़िते
कोशिका आ ऊतक
बनि जाइछ ट्यूमर
ओ कैंसरस हो वा नहि
होइते अछि घातक
करबए पड़ैछ आपरेशन
देमय पड़ैछ एनीस्थीसिया
ध्यान मुदा राखब जरूरी
ई एनीस्थीसिया तात्कालिक हो, सार्वकालिक नहि !

ध्यान धरू सदानीरा

वसन्त सभ बरख अबै अछि
यन्त्र बनल मनुक्खक हृदयमे एकटा स्पन्दन
हृदयमे प्रेमक हिलकोर जगबै अछि
कोइली कुहकै अछि आमन्त्रण दैत
महमह मज्जर मादकता पसारैत अछि
मुदा बन्न कान धरि कुहू ध्वनि पहुँचितो छै ?
मज्जरक सुगन्धि नासारन्ध्र धरि ?

देखाइत अछि आइयो दुष्यन्तक आंखिमे ओ पियास
'न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधि:'
ओ वासना- लोलुप आंखि, ओ कदर्य जिह्वा
ध्यान नहि रहलनि
ई थिक ऋषि कण्वक तपोवन
जतए मात्र संयम, तपस्या आ त्यागक
खेरहा लिखल जाइ छै
अशरण शरण आश्रमक पालिताक भोग
ओ राजा छलाह, ओहो पुरुवंशी, सत्ते ?

हँ, भोगिए त' लेलनि अधरक किसलय राग
आ छाड़ि पड़ा गेलाह हंसपदिका
आ अन्य अनाघ्रात फूल लग
मुदा
दोष की खाली हुनके ?

शकुन्तला कियै बिसरि गेली अपन सीमा
एतेक अन्हरा गेलीह यौवनक उन्मादमे ?
अनसूया आ प्रियम्वदा कियै संग देलखिन
शङ्का नहि भेलनि ओहि अपरिचित पर
की मित्रक काज बाट देखायब नहि ?

किऐक बिसरि गेलीह
पिताक तपोदीप्त आनन
ओ निश्छल स्नेह, अकृत्रिम औदार्य
ओहि स्थानक पवित्रता
आ अपन शीलाभूषण !

कालिदासक गप कियै करी आइ
समय बहुते बीति गेलै
आइ मुदा रहबा लेल जाइ छी बिनु बंधन
बिनु अनुशासन,
बिनु कोनो नियमक चौहद्दीक जखन
त' फेर अपेक्षा कथीक
संयमित बेवहारक उमेद केहन
फेर शोषणक फरियादो त' बेकारे कि ने ?

आइ अहूँ छी सशक्त, मजगूत
विद्या, धन, पद, प्रतिष्ठा सभसँ
सहमति आ असहमतिक अधिकारसँ
प्रेम करबा लेल, समंध बनैबा लेल
के रोकत ?
मुदा प्रेम त' होमय,
थाहू अपन मोन, सम्हरत ई वेग

निमाहि सकब जिनगी
सम्मानक संग, गरिमाक संग, अस्मिताक संग !

कठिन त' ततेक नहि
क' सकब धिया!निमाहि सकब अहाँ,
जी सकब अहूँ मनमीतक संग।

मुदा प्रेम त' जरूरी अछि, विश्वासो ततबे
सुखा रहल प्रेम- रस बचाउ,
ठीके कहलनि कबीर 'प्रेम न हाट बिकाय'
त' अपसियाँत कियै छी ओकरा किनबा लेल
चाकलेट, फूल, आ कि उपहार लेल ?

दूध आ पानि जकाँ मिज्झर होयब जरूरी नहि
दुनूक अलग-अलग सत्ता रहितो
दूनू जरूरी छै,
दूधोसँ बेशी पानि
तेँ कि दूधक महत्त्व नहि ?
हाड़क मजगूती त' दूधे सँ न !
अहाँ छी पानि, पानि बचौने रहू
पानि आ प्रेम थिक जीवन
ओ सूखय नहि, ई ध्यान धरू सदानीरा !

दोसर शीला

आंगनमे उतरि एलै लुकझुक साँझ
रविक यान चलि पड़ल
प्रेयसी प्रतीची लग
एम्हर दुआरि पर ठाढ़ि शीला
तकै छली अपलक बाट ओहि स्त्रीक
जकरा बनौने छलीह धरमक धी
देबाक छलनि भरोस, देखैबाक छलनि बाट
भुतिआइ नहि धीआ, लगै नहि चकचोन्ही
जीवनक नाह लागि सकै घाट।

कोना अनठा सकैत छथि ओ पीड़ा
दग्ध छलनि जाहिसँ संपूर्ण अस्तित्व
अहिबातक पातिलमे दीप लेसले रहि गेल
मिझा गेल मुदा ज्योति
पसरि गेल सगरो अन्हार
कारी, घुप्प अन्हार !

दोष ककर, शीलाक, किंवा ओकर
जे हाथ गहबाक सामर्थ्यक बिना
लोक-लाज बचैबा लेल, माइ -बापक मनोरथ लेल
पकड़ि अनलक कनियाँ
बेजान निरीह मूक पशु बूझि !

गोंग नहि छली शीला,
मँगलनि अधिकार, पुछलनि सवाल
पड़ा गेल ओहि राति लाजेँ
छाड़ि गेल नवोढ़ा
भोगबा लेल गारि, श्राप आ कलंक
मिझा देलकै अभगली कुलक दीप
निराशी, सैंखौकी, अलच्छ !

बिनु दोषक दण्ड, दिन-रातिक फज्झति
देहक असह्य ताप
नहि सहि भेलनि
पड़ा गेली दिअरक संग
बौआइत रहली बहुतो दिन
दिल्ली, हरियाणा, पंजाब
थिर भेली जा धरि,
उबिया गेलै मोन, चलि गेल भगेनिहार
मुदा द' गेल छल गर्भ उपहार !

स्त्रीसँ बनलीह माय
आब अपन सुख, जरूरतिक ध्यान कतय?
बनि गेलीह संपूर्ण माय
बासन मँजैत, बहारनि करैत पोसलनि पूत
पैघ भेल, विवाह-दान करौलनि
लक्ष्मी सन पुतहु, आहा कतेक दिव्य!
सभटा भोगलाहा बिसरि गेलनि
समाप्त भेल संघर्ष अनन्त,
सखि हे!भेल मोर कष्टक अंत !

मुदा, महीनो कत’ लगलै
पाएरमे घुरघुरा आ कपारक टेटर
निचैन नहि रहए देलकै
पुतहुक फोन छलै कि एटम बम,
ओह ! अनर्थ कएना गेल
घुरमैत माथ, हकमैत साँस
एकटा दीर्घ निसाँस
नोर मुदा बुन्नो नहि,
ई त’ निर्णय लेबाक बेर छलै, पुत्र- प्रेमक नहि
बजा लेलनि पुतहु अपना लग
तकतीह कोनो बाट मुदा
बनए नहि देती पुतहुकेँ दोसर शीला।

परिधिसँ मुक्त

राजनीतिक विमर्शमे एखन बंगला देश अछि
रहबाको चाही
पड़ोसी देश जे अछि,
पड़ोसिए टा नहि, आप्तो अछि
सहज अछि ओतुका रहनिहारक सुरक्षाक चिंता
धर्मक नाम पर
अल्पसंख्यक पर अत्याचार
शोषितक बपहारि, रक्षाक गोहारि
के द्रवित नहि होयत?

शीर्ष नेत्रीक शयनकक्षक गरिमाक लतखुर्दन
पहिरन- ओढ़नक लज्जास्पद प्रदर्शन
राष्ट्रपिताक मूर्तिक विखण्डन
ओहो सैन्यबलक शह पर,
ओकरहि मौन समर्थनक बले।

हँ, मोन पड़ि गेल हेतनि सन् पचहत्तर
पिता, भाइ, बन्धुक निर्मम हत्या
कनेको कि कम छनि एखनुका आघात
अपन देश, अपन घरसँ बलात् विस्थापन
ओह! विवशताक पराकाष्ठा!
शरणागतवत्सलता हमर संस्कृति अछि
उचिते सभ तरहक सुरक्षा !

‘आछे सुधू भालो बासा’ कहने छलाह मुजीब
कृतज्ञता वश हमर प्रधानमंत्रीकेँ
आइ पुनः कृतज्ञ छथि हुनक पुत्री!

मुदा अपनहि देशमे जखन अपन धीया
होइत अछि ग्रास विकृत कामुकताक
शीलक संग जानोसँ जाइत अछि
क्षण-क्षण मरैत अछि जँ जीबि जाइ
एक टा नहि, अनेक, एक ठाम नहि सर्वत्र
कोलकाता, गढ़वाल कि बिहार त’ बानगी थिक!

तखन अपन तन्त्रक मजगूतीक,
संस्कृतिक उच्चताक गप
फोक सन लगैत अछि,
निराधार आ जुगुप्साजनक सेहो!

हे यौ जनतन्त्रक चारिम खाम्ह!
सत्य बाजू, तथ्य परसू
नीक हो, अधलाह हो, सुरूप वा कुरूप
ऐना देखबियौ, ओरिजिनल
ई काज थिक अहाँक
मुदा एडिट कि फिल्टर
कूल कि वार्म, फ्रेश कि क्लियर
कन्ट्रास्ट कि ग्रे मे बदलि क’ नहि !

आ हे, निर्भया नाम त’ ठोरो पर नहि आनू
कलमक नोको धरि नहि,
प्रिंटक बटनो धरि नहि

भय अपन रूप बदलि-बदलि रहरहाँ जखन
अबैत हो सोझाँ
‘निर्भया’ शब्द गारि बुझाइत अछि !

आइ डूमल अछि देश हर्षमे,
एहि अवसर पर आजाद देशक, आजाद सोचक
प्रत्येक व्यक्ति,
पूत आ कि धीयाक परिधिसँ मुक्त
एतबहि चाहैत अछि, देश कि विदेश
कत्तहु ‘निर्भया’ नाम नहि अभरय!

सेल्युलर जेल

बर्फ खसैत अछि पहाड़ पर
जान लै बला सर्दी एतय, ओह !
गरम कपड़ा, जरैत बोरसी, हीटर आ ब्लोअर
सभ बेअसर जकाँ भए गेल अछि।

संबंध पर जमल बर्फ
जखन पाथर बनि जाइत अछि
रौद उगलो पर पघिलैत कतए अछि
राखल रहैत अछि वज्र जकाँ करेज पर
जिनगी त' सहजहिँ,
मृत्यु सेहो मुश्किल बना दैत अछि
हुक हुक करैत प्राण, भुक भुक करैत दीप
न जरल सन, न मिझायल सन
एकटा निस्तब्ध भयाओन
मृत्यु- गंध पसारैत अछि !

रमेश कका लड़ैत रहलाह मोकदमा
साल..दू साल..कतोक साल
खूनक समंध पर भारी पड़ि गेल
एक कट्ठा जमीन..
आइ
छोटका भाइ जमीन पर पड़ल छनि
कोना हाक्रोश क' कानथु

कोना आंखि मिलाबथु भावहुसँ
कान्ह पर हाथ राखथु भातिजक ?
अपनहि त' रोपने छलाह बबूर
फेर ई व्याकुलता केहन
नहि जानि कियैक मोन पड़ैत छनि ओ दिन
ऐँठो लॉलीपॉप द' दैत छलखिन
ओकरा पर उठल मायक थापड़
बीचमे आबि अपनहि सहि लैत छलखिन
नहि जानि कहिया, कोना
बबूरमे एतेक काँट उगि गेलै
आंगुरेटा नहि, मोन आ आत्मा सेहो
खूनमखुनाम भए गेलै...

मोन होइत छनि,
देह हिलाकए उठा देथुन भाइकेँ
पहिनहि जकाँ
तमसाथु जोरसँ,
एक थापड़ देथु-चटाक !
आ कानए त'
गड़ासँ साटि लेथु पहिनहि जकाँ
मुदा से कतय?

करेजमे किछु बाझल छनि
दर्द.. न ..न ..दर्दक असरि कतय
हाथ सर्द होइत- होइत कारी भए गेलनि
उठैत पाएर ओत्तहि फ्रीज भए गेलनि
ओम्हर 'राम नाम सत्य'
एम्हर मोनक सेल्युलर जेलमे
एहि बर्फक चक्काक बीच
रमेश कका सदाक लेल बन्न भए गेलाह !

चमेटा

आइ उद्घाटन छल अस्पतालक
थोपड़ीक तीव्र स्वर,
अभिनंदन- वचनक लहरि
सभ टा कर्णविवरमे पैसितो
मस्तिष्क धरि नहि जा रहल छल
हँ, ओएह त' गाम,
ओहनाहे सन लोक, गाछीक ओएह हिस्सा
बूझले हेतै सभकेँ गाल पर पड़ल चमेटाक खिस्सा !

की- की नहि छूटल
माए-बाप, गाम, पढ़बाक अवसर
बड़का ककाक ओ थापड़
बाबूक झुकल कान्ह
मायक आंखिसँ बहैत दहो-बहो नोर
गलती की, ककर ?

एतबहि न जे अनचोके जया अपन ठोर
ओकर ठोर दिसि बढ़बिते छल कि
चटाक !
आह! एखनो झनझना उठलै कान
घूमि गेलै दुनिया
अकबक देखैत रहल
कक्का आ आन लोकक घृणाभरल नजरि !

तेरह बरखक उमिर की एतेक होइत छैक
बूझि सकय 'कुलांगार' शब्दक अर्थ
नीति- नियमक खेरहा कि सदाचार अन्वर्थ !

भागि गेल ओ, कुली बनल, मजदूरी कएलक
ठाढ़ कएलक अपनाकेँ
धीरे- धीरे एकटा स्ट्रीट हॉकरसँ
बनि गेल छोट- छीन दोकानदार
हँ, बियाहो कएलक,
मुदा कत' भए सकल सफल
मोन पड़ए ओ चमेटा
पसेना- पसेना भए जाइ देह
आ सभ ठंडा. ..

कतेक दिन सहितै पत्नी
चलि गेलै
कतेक दुरूह छलै अपनाकेँ समेटब !

कतोक बरख बीतल
अकस्मात् एक दिन तकैत-हेरैत जया अयलीह
कनैत रहलीह
कहलनि गलती हमर
सजाए कटलहुँ अहाँ
हम त' विवाहो कएलहुँ
ओकरो देलियै ओकर प्राप्तव्य
जे शक करैत रहल ता जिनगी
मुदा अहाँ…

धीरे- धीरे जयाक कोशिश
मनोवैज्ञानिक सलाह
कतोक सेशन आ सेशनो केहन
टूटब, दाना -दाना छिरिआयब,
स्मृतिक दंशसँ आंखि मिलायब
ओहि घावक टीस फेर सहब
लहूक टघार पर चलैत रहब।

कहल जाइ छै -
बारह बरिस पर घूरोक दिन पलटै छै
मुदा, पूरा सत्ताइस बरस बाद
भए सकल पुरुष विभु !

लोकलाज!
कोन लोक, केहन लाज
ओ, जे राइकेँ बनबै छै पहाड़
जे फोसरीकेँ बनबै छै भोकन्नर
लुत्तीमे ढारैछ घृत, बनबैत अछि धधरा
ओहि तापसँ सेकैत अछि रुग्ण मनक कुण्ठा !
माइ-बापक सिनेहक छाहरि अपहृत कएनिहार
पाएरक निच्चाँ तप्पत बालु उझीलनिहार
लोक न जया लेल महत्त्व रखैत छल
न विभु लेल आब।

अपमानक ज्वाला मुदा
घुरिआइत छलनि माथमे
दुहू किछु विचार कएल
निश्चय कएल
आ घुरि अयलाह गाम पूरे तीस बरखक बाद !

गत भए गेल छलखिन माता-पिता
जथा-पात बेचलनि, मुदा ओ गाछी नहि
लागि- भिड़ि, पहुँच- पैगाम
ओत्तहि, ओही गाछीमे बनल चिकित्सालय
आकर्षण छलै, मनोरोग विभाग
उद्देश्य छलै दोसर विभुक सुरक्षा।

अपना दम पर

भानसक गैसक व्याकरण
ओहि पर रचल स्वार्थक साहित्य
बेर-बेर आवृत्ति भेल तकर
आह, कतेक चिन्ता गरीबक
ओकर आंखिक, फेफड़ाक, बजटक !

गुमानो त' कम नहि
कर्ण- विवरमे पहुँचल धरि अबस्से
मुदा
मस्तिष्क नहि लेलक त' नहिए लेलक।

कारण
उपकारक अहङ्कारक निच्चाँ
दबि जाइछ सदिच्छा
मेघक तुमुल गर्जनमे
वृष्टि भए जाइछ निपत्ता
पयोमुख कुम्भक विष-बुन्न
की सभदिन झँपले रहतै
कुत्सित लक्ष्यक, बासि विचारक,
गन्हायल काजक दुर्गन्ध
कतेक दिन आंखिसँ ओज्झर रहतै ?

गजब त’ ई जे
ई सभ साहित्यक कलेवरमे
ककर सहित होयबाक दंभ
कर्त्तव्यक, विचारक किंवा आदर्शक,
शुचिताक, संयमक, गरिमा वा मूल्यक ?

साहित्य कतए, सभतरि राहित्य अछि
विश्वासक, स्नेहक, विनयक, शीलक
नीतिक, नियमक सुखाड़े त’ पसरल अछि।

भाव आ भाषाक अशुद्धि
'करण' बनब त’ पार लागल नहि
अनावश्यक 'कर्तृत्व' क मद बड़ जोरगर
वचनमे 'सम्प्रदान' बनल जनता
अनकर क्रियाक फ’ल भोगैत
बस 'कर्म'बनल, कर्म करैत
फल-प्राप्ति सँ 'अपादान' बनलि
प्रजातंत्रक परिभाषामे
ककर, ककरा लेल, ककरा द्वारा
'सम्बन्ध' क विश्वास करैत अछि
मुदा बरखो बरख, दशको दशक
बितलाक बादो
भूख, बेगारी आ विषमताक
जमीन आ जमीरक गरीबीक
'अधिकरणे' त’ बनल अछि !

लैंगिक अशुद्धि होइतो साहित्यक दम्भ !
लकड़ी, कुन्नी, कोयला वा गैस पर बनैत भोजन
स्त्री -पुरुष सबहक भूख मेटबैत अछि
भूख मानै छै की कोनो भेद
जेबी धरि हारि जाइछ
मंहगाइक सुरसासँ
आ हे,
गरीबक घ'रमे जेबी एक्कहि टा होइत छैक।

तेँ हे प्रभो !
हककेँ उपकारक खोलमे लपेटक बेर बीति गेल।

हम नपने छी सीमा आकाशक
खुशी- खुशी समुद्रक गहराइमे पैसल छी
पन्ना खूब पलटल अछि ज्ञान आ विज्ञानक
पाठो पढ़ल अछि अधिकार आ कर्तव्यक
आउ साहित्यक अर्थ हम बुझबैत छी
शब्द आ अर्थक समन्वय हम करैत छी
मद्धिम सन आंच पर साहित्य हम सिरजैत छी
अपनहि दम पर आगि हम जरबैत छी
हँ, अपनहि दम पर आगि हम जरबैत छी..

इज्जतिक बटखरा

झटकारि क’ पाएर बढ़बैत बिजलीक
गति घ’र लग अबिते मन्द भए गेलै
बड़का गाड़ी जे लागल छलै !

गाड़ी मने दीदी
दीदी मने हाकिम
हाकिम मने अनुशासन
आ साहस कत’ छलै बिजलीमे
शासन आ अनुशासन सहबाक !

भरि दिन त’ सएह करैत अछि
खने ई गाड़ी त’ खने ओ
पाइप लगबैत, मीटर पढ़ैत, पाइ लैत
सभटा हिसाब मनेजरकेँ दैत
मोन रहैत छै बड़काक किताब
छोटकीक जुत्ता आ संकल्प
निशाँमे डूमल पतिक गति सुधारबाक।

आब त’ आदति भए गेलै
सासुक जीवट ऊर्जस्वित करैत छैक
हुनकहिँ भरोसेँ निकलि अबैत अछि
जे दू टा पाइ
पड़िबक ज्योतिए जकाँ

मुदा ताकति त’ दै छै पूर्णिमाक उमेद जियैबाक !
घरमे पसरल छल मौन
माइ-बेटी चुप
बच्चा सभ स्तम्भित
जबर्दस्ती मुसकाइत बाजलि बिजली
बहिन दाइ, खबरिओ नहि देलखिन
अपन अयबाक ?

अहींक बाट तकैत रही बिजली
एना किऐक करैत छी कहू
हमर पद आ प्रतिष्ठाक लतमर्दन लेल
भाइ त’ छलैहे, अहूँ ?
एहिसँ कतेक भेटैत अछि ?
हम देब, मुदा काज नहि अछि घरसँ बहरयबाक !

ओ मेहनति करैत छथि,
स्वावलम्बी बनलि छथि
बच्चा सभ मेहनतिक पाइसँ
पोसाइ छैक,
तोहर नाक किऐक कटैत छह ?

माँ, मुदा काजो त’ देखही न...
काल्हि लाजेँ मरि गेलहुँ
हिनका ओत्तए देखि..

बुच्ची, शोभैत नहि छह एहन गप तोरा मुँहसँ
काजो की छोट- पैघ होइ छै
जहिना हिनका देखिओ बिनु देखने बहरा गेलह

बापोक परिचयसँ लाज होइते हेतह
मुदा ओही पिउनक मेहनतिसँ
एतए धरि पहुँचलह
जाह !
एहने सोचक संग नियाय करबह
आह, बड़ निराश कएलह..
जाह बुच्ची, अबिह' बेटी बनि
मुदा इज्जतिक बटखरा लए नहिए टा अबिह'...

ध्यानसँ देखह, कतौसँ कम आत्मविश्वास
देखाइत छह
रुग्ण पतिक कतौ छाँहिओ देखाइत छह
समेटि रहल छथि टूटल पाँखि
आ हम संग छियनि ता धरि
जा धरि पाँखिमे उड़बाक कुव्वत नहि आबय !

वसुधा-माधवी

आठ सै श्यामकर्ण श्वेत अश्व मँगलखिन गालव
नहि द’ भेलनि त’ द’ देलखिन बेटी
सर्वगुण सम्पन्ना अक्षतकुमारि माधवी
बन्हकी लगैबा लेल
पुत्रजन्मक उपादान बनबा लेल
अनेक पुरुषसँ
ययाति सन श्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा !

ई श्रेष्ठता, नैतिकता केम्हर छल
पिता लग, जे अपन देयता
बेटीक मर्यादासँ पैघ बुझलनि
गालव लग, जे निर्धन निर्बल होइतो
दक्षिणा देबाक हठ धेलनि
गुरु विश्वामित्र लग,
जे शिष्यक हठसँ कुपित भए
असंभव दान मंगलनि
अथवा ओहि ग्रहणकर्त्ता,
चतुर्दश विद्याक ज्ञाता लग,
जे स्त्रीकेँ बन्हकी लगबैत रहल
एके बेर नहि, चारि चारि बेर !

धन्य माधवी, मन वा कुमन
पिताक आज्ञा माथ धेलनि
ऋषिक लेल अश्व जुटौलनि

दू सै कम पड़लनि
त' स्वयं बनि गेलीह अश्व
देलनि एकटा पुत्र विश्वामित्रोकेँ।

मुदा घुरि क' नहि गेलीह पिता लग
न ऋषि लग
गेली जंगल तपश्चर्या लेल
बापक, गालवक, विश्वामित्रक वा समाजक
पाप धोएबाक उपाय ताकए !

बुझबामे आबि गेलनि
सभ छथि कुण्ठित मनोभावक दास
क्यो नहि अपन
न पिता, न ऋषि गालव,
न दू सै घोड़ाक नाम पर
साल भरि शोषण केनिहार विश्वामित्र
आ कि सहवासक बदला घोड़ा देनिहार राजा
हर्यश्व, उशीनर वा दिवोदास !

ओ छली निष्प्राण, भावनाशून्य
वस्तु
आजुक भाषामे कही त' सेक्स वर्कर !

वसुधा विरोध केलक पित्तीक
नहि बनब किन्नहुँ दोसर माधवी
नहि मानलक, जबर्दस्ती सौदा केलक
विवाहक आवरणमे !
क्रेताक जबर्दस्ती एकबेर सहियो लितय

विवशता, लाञ्छना निगलियो लितय
घर-घड़ाड़ी पर कुण्डली मारि बैसल
पित्तीकेँ एक बेर छाड़ियो दितय
मुदा देहक कमीशन लैत देखि
खून खौलि जाय
ई निर्लज्जता बर्दाश्त नहि होमय
खेलौना बनब सहाज नहि होमय
मौका पबितहिं चक्कू भोंकि देलक
दूहूकेँ।

समर्पण केलक पुलिसमे
कोनो अफसोच नहि
कोनो अपगड़ानि नहि !

ने ययाति पिता छलखिन न गालव गृहीता
रहबो करितथि त'
ओ पुराणकालक स्त्री नहि
वसुधा होइतो अनर्गल सहत कतेक
प्रतिकार करत, सीमा भरि
जीवनभरिक दासतासँ
जहलक चहरदेबारी भ'ल !

बोनस

प्रेमक उदात्तताक संग
राजस तामस भाव सेहो मनुष्यमे विद्यमान
माया कही वा मोह
काम वा कि क्रोध
प्रभावी मुदा आसुरी वृत्ति
'यन्मायावशवर्ति जगत्' कहलो अछि।

लीकेज पर हल्ला बहुत
पेपर लीक, ईवीएम हैक
घरक छत लीक
नियम कानून-व्यवस्थाक छेद
प्रजातंत्रक नेओंमे भूर
बच्चाक बचपन
युवाक भविष्य,
आगू बढ़बाक स्वप्न सजौने
छात्र-जीवनक अपहरण
स्त्री-अस्मिताक
पुरुष-गरिमाक
युवामन-मूल्यक अहर्निश क्षरण !

भाषा- भूषा- प्रान्त- वादक ई घटाटोप
सगरो कएने अछि अन्हार
हम, हम आ मात्र हमहीं

छोटसँ पैघक मुँह एतबहि आवाज
आवाज जेना हो चित्कार
कान बहिर, मन अवसन्न
आत्ममुग्ध नायक
दिशाहीन अनुवर्ती !

बड़काक ताकतिक अहम्
छोटकाक बपहारिक अवाज
मारि काटि, अनन्त लिलसा
ग्रहणक बेसम्हार हाहि !

नियन्त्रण करब कठिन,
असंभव धरि नहि
रुकि सकैछ
मानसिक वाचिक कायिक अनीति
आन्तर इच्छा जरूरी मुदा !

प्राप्तिमे तोष, प्रेममे भरोस
आंखिमे पूर्वाग्रहरहित इजोत
उन्माद नहि, समर्पणक परितोष
एकताक ताकति
भौतिक प्रवाहोमे होश !

बूझब जरूरी
ए गुणा ए 'ए वर्ग'
बी गुणा बी 'बी वर्ग'
ए आ बी जँ भ' जाइ एकठाम
त' जुड़ै छै ए वर्ग आ बी वर्गक संग

दू ए बी बोनसमे
आ यैह बोनस बुझी जीवन सूत्र
फेर कतय लीकेज केहन लीकेज ?

मुदा हम सभ बिर्त छी उन्टा पर
जोड़क जगह घटाव पर
तखन परिणाम की
दू एबीक ह्रासे कि ने!
ओ होउ बरु रूस, यूक्रेन, इजरायल फिलिस्तीन
अथवा शक्तिमन्तक दम्भमे डूमल अमरीका !

चयन करबाक आधार धरि विवेके
की करब, कियै करब,
कतेक जीब, कोना जीब
तामस भोगक शतायु
अथवा
प्रज्वलित शौर्यक बरु कम्मो आयु।

कपूतक प्रायश्चित्त

आनन्द निकेतनक बड़का गेट
बीएमडब्ल्यूसँ
उतरैत सूटेड बूटेड समृद्ध
आ एगोट हारल सन वृद्ध
आभिजात्य, व्यक्तित्वक ओज
चालिक ठहराव, सुसज्जित परिधान,
वृद्धक आंखि मुदा पीड़ाक आसमान !

‘हमर पिताजी, उम्र अस्सी
डाइट चार्ट, दवाइक लिस्ट
पढ़बाक पोथी, चिकित्सकक पर्ची
कोनो तरहक बेथुत नहि होयबाक चाही !

‘डेबब एतेक कठिन आ
विशिष्टता- बोध धरि बाँचले
ओह!ई पैघ लोक, छोट काज
पितासँ आंखि मिलबैत
 कनियों होइतो अछि लाज!’
सचिवक आवाज़ छलै कि धरगर छुरी !

मैडम, कनेक बहार एबै
की कारण बूझए चाहबै
कि एक्कहि नपनासँ

धनिककेँ कटघरामे ठाढ़ करैत रहबै
ई पूर्वाग्रह शोषणक एकटा प्रकारे थिक
एहि तथ्यसँ आंखि मुनैते रहबै ?

हँ, सत्ते कथुक बेगरता नहि
धन-पद-नोकर-चाकरक खगता नहि
एतयसँ अधिक सुख-साधनक गारंटी
त' अबस्से
तखन किऐक
एतए धरि पुत्र आयल
जाहि आंखिक सिनेहक अजस्र अछिंजलमे
डूमि जीवन बिताओल,
आइ ओहि पिताक
तिरस्कार भरल नजरिक तीर सहल
कपूतक तमगा लपेटल !

हमरा लग अछि मात्र तीन मास
हँ, ठीक सुनलहुँ, ल्यूकेमिया !

छ: मासक मातृ विहीन शिशु लेल
पिता जीवन, यौवन, सुखैषणा समग्र
वारि देलनि
मिनट, घंटा, दिन, मास, वर्ष निछावर केलनि
आइ धरि हुनक साँसक केन्द्रमे
छी मात्र हम !
ओ हमरहु लेल देवतासँ कनियों नहि कम
हमर निष्प्राण देह हुनका देखि हेतनि !

हमर कृतघ्नता सहि लेता ओ
जीबि लेता जीवन एतय लोक सभक संग
एखन अवश्य
चोट ताजा कएने छनि उद्भ्रांत
सम्हरि जेता मुदा
सहने छथि कतेक घात बनि चट्टान !

मुदा पुत्र शोक !
निहोरा अछि तेँ
हमर खबरि हुनका नहि भेटनि !

बीस लाखक एफ डी
पांच बरखक फीस अग्रिम
ई स्वीकृति पत्र !
जँ बाँचि जाय,
पिता सन हतभाग्य लेल
उपयोग होमए !

चरणस्पर्श लेल झुकल हाथ
बरजि देलनि झटकारि क' बूढ़ा
फेरि लेलनि नजरि
क्षणांश पिताक पीठ पर दृष्टि रहल
बरजोरी अबैत नोर ठेलि पाछाँ कएल
प्रायश्चित्त करब, कहि बढ़ि गेल
एकटा कपूत !

मत्स्यकन्याक न्याय

आइ जखन देखैत छी प्रजातंत्रक
वसनक तर राजसत्ताक अहंकार
‘एकोऽहं’ केर निर्लज्ज घोष
सभ नीति-नियमक उड़ैत खिल्ली
तन्त्रक दुरुपयोग
स्वार्थक भीषण ताण्डव
की सत्ते हम सभ द्वापरसँ आगाँ छी ?

राज्यक लिलसा प्रभुताक मद
पतनक अंधकूपमे ल' जाइतो
विषकन्यावत् सम्मोहक होइछ !

गीड़ि लेलनि माय लाज-अपगड़ानि
बजौलनि औरस पुत्र
अपने मुँहेँ कहलनि अपन किरदानी
पालन-पोषणक कर्त्तव्य कतए
अधिकारक बोध मुदा पूरा
नियोगक आदेश दुहू निर्दोष बालासँ
भीष्म हतबुद्धि, व्यास विमूढ़ !

जन्मदात्रीक आज्ञा
मुदा भारी पड़ल
सद्य:वैधव्य-प्राप्त स्त्रीक भावना पर।

धर्म आ अधर्मक व्याख्या कयनिहार
शरीर- सुख तृणवत् बुझनिहार
गार्हस्थ्यक बन्हनसँ दूर रहनिहार
परोपकारक अर्थ बुझलनि
मायक तृष्णा-शमनक उपादानमे
आ तेँ
भयभीत अम्बिकाक समागममे
प्रवृत्त भेलाह कर्त्तव्य-बोधसँ !

एतबहि नहि, एक्कहि टा पुत्र किऐक
बेटा आ धनसँ केओ अघायल की
दोसरोक होमय मान-दलन
फेर बनथु ब्रह्मा व्यासे !

कामेच्छा-विजयी महर्षि व्यास
'मातृदेवो भव' आर्षवाक्यकेँ
लगौलनि माथ
खगता नहि भेलनि
स्त्रियोक इच्छा पूछल जाइ
अठारह पुराण लिखनिहार व्यास
धर्मक मर्म कतेक बुझलनि !

थर-थर कँपैत ओ राजवधू
आनल गेलीह बलात्
पत्नी बनलीह बलात्
वैधव्यक बादो भोगल गेलीह बलात्
धर्मक नाम पर !

राजमाताक आदेश पुनः...
गणिका बनबासँ मना करबाक साहस कतए
नीति-नियमक कारामे संतप्त स्त्रीक
एकमात्र दासी बुझलनि मनोभाव
आ बाँचि गेलीह पुनः दुष्कर्मसँ !

दृष्टिविरहित,
पाण्डुरोगग्रस्त
दुइ टा पौत्र
होश मुदा कतए
फेर जाल खसैबाक ब्योंत लगबैत रहलीह !

ध्वस्त भए जाउ मर्यादा
विखण्डित भए जाउ अनुशासन
मुदा यौवनक बोरसँ बझाओल राजा
ओहि बाटेँ हस्तगत राज्य
कथमपि जालसँ नहि बहराउ
ई मत्स्यकन्याक न्याय थिक !

आश्वस्त खाढ़ीकेँ स्वस्ति

लिङ्ग भेद मुक्त समाज आब कल्पना नहि
यथार्थ बनि गेल अछि
विश्वास करबा लेल कतौ दूर नहि
कोनो पब, बार, नेता अभिनेताक पार्टी नहि
फ्राइडे नाइट क्लबो जायब जरूरी नहि
एम्हर ओम्हर, पार्क, मेट्रो, पार्किंग, लिफ्ट
कत्तहु जा सकैत छी !

विकसित समाजक परिभाषा
निजताक व्यापक पसार
शरीरक, मोनक अपन व्यापार
संयमक दरकार की
भूख की अपैत-ऐंठ मानैत छै ?

ओना एतेक आश्चर्य किऐक
की खेत खरिहान, बाग-बगैचा
मजूर-मजूरनी देखने नहि छी
हँ अपन आभिजात्यक मदमे
घृणासँ नाक सिकोड़ि बढ़ल अबस्से छी !

आ एतबहि किऐक,
कोनो टोलक पालकीक ओहार
दोसर टोलक हवेलीमे

खुजैत की नहि देखल
ओ छलै भूखक हाहि बेसम्हार !
‘ननदि-भाउजि’ आ ‘रंगीन परदा’
सेहो एहि समाजेक कि ने
तन कतौ पेट भरबाक साधन
त’ कतौ विलासक बेवहार !

ओहि अन्यायक, असंतुलनक
अंततः पटाक्षेप भेलै
नीके ने,
तैं त’ ‘पृथ्वी पुत्र’ लिखा सकल
‘खोंतामे चिड़ै’ आबि सकल
समाजक सड़ल- गलल नियमक छाती पर
समतामूलक समाजक
प्रेमक निर्मलताक
गहूम आ गुलाबक संतुलनक खेरहा
बिनु कोनो चौहद्दी लिखाइत रहल।

आब कनेक ठमकि जाउ,
मर्यादाक गप, नीति- नियम- मूल्य
पिछड़ल सोचक निशानी थिक
स्त्री-पुरुष भेद सामन्ती सोच
प्रेमक खेत पर आरि नहि बान्हू
प्रतीक्षा किऐक प्रकृतिक आह्वान लेल
कोनो अढ़मे जयबाक प्रयोजन की
तैं आंखि अभ्यस्त करू
असहजताक बोधसँ मुक्त होउ
आनो प्राणीकेँ देखनहि त’ छी

समय-चक्र बदलि गेलै
ई थिकै अपन शरीर पर पूर्णाधिकारक समय,
स्वीकार करू !

आवरणक दरकार की
आत्मा देखू, ओकरा पर कोनो झाँपन होइछ
त’ एहि नश्वर काया लेल एतेक चिन्ता
हाय-हाय, दाइ-माइ
संकुचित सोच थिक
बढ़ू एहि सभसँ
मुक्ति थिक काम्य, बन्हन नहि
एहि मुक्तिक बाट पर चलैत, दौड़ैत खाढ़ीकेँ
स्वस्ति दियौ, आश्वस्ति त’ छैके।

धोबिया पाट

आंगुरमे गड़ल काँट
दर्दक अनाम लहरि
घायल वर्तमान
भविष्यक अनिश्चितता
की गरीबी, बेकारी आ तज्जन्य मजबूरीक हाट नहि ?

फुटपाथक जीवन
सूखल मुँह, ओझरायल केश
ठोर पर पपड़ी
किछु पयबाक उमेदमे बढ़ल हाथ
बहुतो शिशुक कपोल पर भाग्यक चाट ई नहि ?

बेलीक गजरा
गुलाबक गुच्छा
बिकेनहिँ रोटीक आशा
ककरो भूख, ककरो शृङ्गार
विषमताक खुल्लमखुल्ला फाँट की नहि ?

राजधानीक सड़क
भगैत- दौड़ैत गाड़ी
चमचमाइत स्कूल- ड्रेस
कूड़ा जमा करैत बचपन
आक्रोशक धँसि रहल काँट की नहि ?

पैघ पैघ गप
विकासक खेरहा
आजादीक अर्थ
बेजान सन आंखिमे जन्म लैत
प्रतिहिंसाक फूजल बाट की नहि ?

उपभोग बेहिसाब
भकोसबाक उन्माद
गाम की शहर की
हल्ला, घोंघाउज, उतरा चौरी
यत्र तत्र पसरल धोबियाक पाट की नहि ?

वर्चस्व

ककरो वर्चस्व हमर चिंताक विषय नहि
कोनो गणराज्यक प्रभुतासँ भय सेहो नहि
नाटोमे समावेशक चिन्तोसँ दुब्बर नहि
महत्त्वाकांक्षाक चतरैत लत्तीसँ
ओझरायल त' किन्नहुँ नहि।

के दुस्साहस केलक सोझाँ-सोझी लड़बाक
किंवा ककर असुरक्षा उन्माद बनि आयल
जहिखन
अविवेकी राजा प्रजाक भ'ल नहि चाहय
इतिहास साक्षी अछि
विनाशक भेल अछि ताण्डव !

दुर्योधनक मद, रावणक अहङ्कार,
मित्रदेशक नीति
हिटलर वा मुसोलिनीक तानाशाही वृत्ति
लाखक लाख लोकक,
सभ्यता आ संस्कृतिक
क्षयक हेतु देखितो कोनो नहि भीति।

किन्तु
हमर आंखिमे नचै अछि
ओतुका निरीह जनता

जे ठाढ़ अछि तोपक मुहान पर, नाशक वितान पर
जे भोरसँ सांझ धरि रोटी आ नोन लेल
बच्चाक शिक्षा लेल, लेल गेल लोन लेल
सप्ताहान्तमे सिनेमा या होटलक बिल लेल
भोरसँ साँझ धरि अपसियाँत भेल रहैत अछि।

हमर आंखि तीतल अछि
ओहि माए-बाप लेल
जे करेज पर पाथर धए
बच्चाकेँ विदेश पठबैत अछि
खेत बेचि, ऋण- पैंच लए
नेनाक स्वर्णिम भविष्यक सपना
पुरैबा लेल
अपन पेट कटैत आ जरूरति कतरैत अछि ।

आइ हतोप्रास छैक ओकर उमेद
देखि रहल सन्तति आकाशक नीचाँ
शीतसँ कठुआइत
एक बोतल पानि वा दूटा ब्रेडक पैकेट लेल छिछिआइत
जिनगी आ मृत्युक बीच देबार दिस तकैत
कातर छै आंखि आ मोन छै औनाइत
कहुनाक' बौआ-बुच्ची घ'र त' अबैत !

की सत्ते कहलनि दिनकर -
भ' चुकल अछि सिद्ध तों शिशु छें एखन अनजान
फूल- कंटक केर तोरा कनिको ने छौ पहिचान
हाथमे तरुआरि ल' खेलबाक नहि छौ ज्ञान
अंग कटतौ जँ न करबेँ उचित-अनुचित ध्यान।

बाबूजी बूढ़ भ' गेलखिन

बाबूजी, जे गरजैत- बरसैत छलाह
अपन गप सभसँ ऊपर रखैत छलाह
केओ बाजि दै जँ सोझाँसँ
एकबेर बस देखिते त' छलाह
 मुदा ओहिमे छलै कशाक चोट
मुदा आब कतए ओ दृष्टि,
कतए गेल ओ रौब
की बाबूजी सत्ते बदलि गेलाह ?

घरक मेरुदण्ड
परिवारक धुरी होयबाक दम्भ
एकहि आवाज पर घरभरिक कम्पन
माँक हुनकहिँ हिसाबसँ राखब अनुशासन
‘चरित्र, परिश्रम, विद्या
समयपालन, शिष्ट आचरण’ होइछ सफलताक मूल
सदति एहि मंत्रक करैत छलाह जाप
बाबूजी एहने छविमे शोभैत छलाह।

आइ मुदा
भाइजी हुनकर खास खबासकेँ
बाहरक बाट देखौलनि
भौजी आठ बजे चाहक कप देलनि
भातिज लाउडस्पीकर जकाँ टीवी चलबैत रहल

हम त’ सकदम
मुदा
ओ टुकुर-टुकुर देखतहिँ रहि गेलाह
की बाबूजी केओ आन भए गेलाह ?

किछु पुछियनि त' बुदबुदाइत छथि
किछु बजबासँ पहिने एम्हर-ओम्हर तकैत छथि
भोजनक थारीमे हन-छिन ?
नहि, नहि, जे भेटैत छनि, गीड़ि लैत छथि
कातर आंखि, निस्तेज चेहरा, निरर्थक अस्तित्व
हमर बाबूजी एतेक कियैक बदलि गेलाह ?

की शान्त-निरीह सन देखाइत माँक
चट्टानी शक्तिसँ ताकतवर छलाह ओ ?
चुपचाप काजमे लागल
माँक बलसँ एकबोलिया आ मोतबर छलाह ओ ?
माँ की गेल, बाबूजी किछु आओर भ' गेलाह
सत्ते बाबूजी आब बूढ़ भए गेलाह।

पुरना रंग

बेचारी मिसेज आहूजा..
सहानुभूति पूर्ण स्वर सुनलनि मिसेज बत्राक
आइए त' कार्यालय जॉइन केलनि
मिसेज आहूजा
पतिक मृत्युक मास दिनक बाद
सहजहिँ अवसन्न छलीह,
मुदा दु:ख त' मोनक कि ने ?
अयलीह, बकियौता काजक फाइल फोललनि,
मति स्थिर करिते छलीह कि…..
कानमे अयलनि ओ शब्द
पघिलैत कांच जेना
ओ बजौलखिन बत्राकेँ, कहलखिन-
सुनू, ई 'बेचारी' शब्द घुरिकए नहि बाजब
भरि पोख प्रेम पौने छी पतिक
भरल पूरल परिवार,
धिया-पुता, घ'र- दुआर
सभ छोड़ि गेल छथि हमरा लेल
हमर दु:ख मात्र हमर दु:ख,
मुदा हम बेचारी किन्नहुँ नहि…

पतिक गुर्दा बदलयबा लेल
अपन घ'र धरि बेचि लेलनि मिसेज मेरी
मुदा नहि बचा सकलीह हुनक प्राण
हमर भाग !

दीरघ साँस लय जुटि गेलीह
कार्यालय, ओवर टाइम आ आन-आन जोगाड़मे
अभावक अनुभव नहि होमय
बच्चा सभकेँ,
मायक उदास मुँह देखि
अवसन्न नहि होमय ओ सभ..

भागक दोख,
दैव किछु एहने परिहास केलकनि
मिसेज आशाक संग सेहो
ओना ई बुझले छलनि..
अजय आ अन्नू कोरेमे छलनि
तखने पत्नी कुदरूप आ स्टेनो सुन्नरि लागए लगलनि
पाँच बरख, हँ पूरे पाँच बरख..
आशा कोना समय बितौलनि,
दूटा बच्चा, आफिस आ जवानी कटलनि,
बहुत कम्मे लोक जनै अछि।

रोगी पति जखन घुरलाह
आशा शरण देलखिन
क्षमा नहि, मात्र शरण..
धिया- पुता नहि बुझौ बापक किरदानी
स्कूलमे नहि कहए पड़ौ बापक गन्हाइत पिहानी
व्यक्तित्वमे नहि अबौ कोनो रिक्ति..
आ तेँ,
सभ किछु ऊपरसँ चलैत रहल समतल
अन्तस् मे पूनमक जलधिक हलचल
न्यूरॉन सेल मुदा अकम्प।

सात बरख जीबो केलाह जयन्त
फैटी लीवर..
लीवर फाइब्रोसिस..
लिवर सिरोसिस..
अंतमे अपन काज केलक
जयबाक छलनि, गेलाह…
बच्चो सभकेँ अन्दाज छलैहे।

आफिस जयबाक छलनि आशाकेँ
नूआ बहार करए लगलीह
आब लाल-पीअर त' नहिए
तखन ?
एकटा सिलेटी रंगक नूआ हाथमे लेलनि
ननदि चोट्टहि हाथसँ छीनि लेलखिन्ह..

भौजी, अहाँ कम स' कम
रंग पर ठप्पा नहि लगबियौ
रंग त' रंग छैक,
सभ रंग नीक, सभ रंग आकर्षक
लाल अड़हुल आ कि उज्जर सिंगरहार
कारी घनगर मेघ कि हरियर कचोड़ पात
पीयर सुरुजक किरिन कि नील आकाश
सिलेट पर लिखल उज्जर आखर
आ कि माटिक रंग
सभ उल्लासे दैछ, सौंदर्ये बिलहैछ।
जाउ, सक्कत करू म'न
दैन्य नहि लिखू त'न
युद्ध त' एसकरिए लड़लहुँ सभ दिन
आबो लड़ू
मुदा ओहि पुरने रंग रूपमे।

स्तब्ध

दक्षिण दिल्ली
अफ्रीका एवेन्यूक लालबत्ती
एकटा छोट बच्चा बहिनक डेंग पकड़ि
रोड पार करा रहल अछि
चिर्री- चिर्री भेल अंगा, कंकाल शरीर
पेट फुल्ली बहिनक पेटो त' भरबाक छै
तेँ गाड़िए- गाड़ी हाथो पसारबाक छै !
महाकवि निरालाक भिक्षुकक स्मृति..
मधुपजीक घसल अठन्नीक स्मृति
की सत्ते बदलि गेलै जमाना ?

ओहीठाँ एकटा महिला
गुलाबक डंटी तोड़ैत अछि
जुआन बेटी पन्नीमे बान्हि गुच्छ बनबैछ
किछु लम्पटक विकृत नजरिक तीर सहैछ
छोटका गाड़ी बलासँ किनबाक
नेहोरा करैत अछि !

अरे, ई की ?
लैंड क्रूज़रसँ मूड़ी बहार करैत
स्वामी अछि वा चालक
सौ टकाक गुच्छक भाव केलक तीस
मोल तोल कय चालीस टकामे

जा जा पाइ भेटै बत्ती भेलै हरियर
गाड़ीक पाछाँ दौगैत बच्चा
पाछूसँ अबैत गाड़ी घिसियबैत चलि जाइ छै कत्ता दूर
हम स्तब्ध
देखैत छी यथावत् चलैत गाड़ी
ओकर निष्प्राण देह
लहूक टघार आ सभ्य लोकक पानि बनल खून !

जी हँ श्रीमान्, ई थिकै दिल्ली
सत्ताक केन्द्र, देशक हृदय स्थल
जतय बनय छै नीति, होइ छै कार्यान्वयन
जन कल्याणकारी योजनाक,
भूख मिटैबाक, घर बनैबाक, औषध देबाक
सभक लेल शिक्षा आ मिड डे मील खुअयबाक !
राउंड टेबल मीटिंगमे पाइ बहै छै पानि जकाँ
कागदमे विकासक गाथाक ढढ्ढर
चिन्नीक रस पर भिनाभिनाइत माछी जकाँ
बड़का बड़का बात बहराइ छै।

ओही ठाँ होर्डिंग लागल देखायल
'शैतान' आबि रहल अछि आठ मार्च क'
आ हम बिचारि रहल छी
की शैतानक आयब आबो बाकिए अछि ?

ममत्व

पितासँ सुनने छलहुँ
एकबेर बड्ड दु:खित छलाह
खुनियाँ अमांशय भेल छलनि
डागदरो जबाब दए देलकनि
ताहि दिन बड़का रोग छलै ई
मुदा यमक घ'रसँ घुरि अयलाह
केओ बजै चमत्कार त' केओ कहै
पितामही जितिया जे कयने छलखिन।

फेर माँकेँ देखैत रहलहुँ बच्चेसँ
कतबो मना करियै, मुदा कियैक मानत
हरिवासर, दुर्गाष्टमी चौरचन कि जितिया
कनीको की मुँह मलिन होए
बहुत रास आफत -बिपति अबैत रहलै
रहलियै मुदा सभ गोटा नीकेनाँ
सत्ते, माँओ त'
सभ दिन जितिया कएने अबैत रहल !

आब बचलहुँ हम,
तर्क-वितर्क म'न मथैत रहल
असंभव-संभव भय व्यापैत रहल
छुट्टिओ कतेक लितियै
दू घंटा बस-मेट्रो करैत आफिस पहुँचिए

गेलियै
कतबो कहैत रहल सहकर्मी सभ
साहस कत' भेल पानिक बुन्नो लेबाक
शरीर क्लान्त अबस्से भेल, मुदा म'न
धिया-पुताक कल्याण लेल
जिमुतवाहनकेँ गोहर'बैत रहल !

स्त्री शहरक हुऔ वा कि गामक
शिक्षित होमए कि अनपढ़
नोकरिहारिन की घरेलू
ओकर भीतर होइत छैक एकटा सामान्य तत्त्व
ममत्व
सभ तर्कसँ फराक, सभ युक्तिसँ असम्पृक्त
कुशक कलेपो नहि लगै संततिकेँ
तैं कतौ 'अहोइ' त' कतौ 'जितियाक' बहन्ने
तपस्या करैत रहल
पॉजिटिव एनर्जीसँ घ'र-परिवारक
कल्याणक हेतु बनल रहल।

की निन्न टूटल?

अहाँ कनियोँ सोचलहुँ
अपन करनीक मादेँ
अपन अतृप्त लिलसाक परिणामक मादेँ
ग्रहणक उन्मादमे
की की नष्ट कयलहुँ
अपन प्रेम, अपन गरिमा, मातृत्व, पत्नीत्व
रानीक मर्यादा, राजमाताक उच्चासन
किछु बाँचल की ल'ग ?

राजक लोभ, शक्तिक लिप्सा, भोगक उन्माद
दिव्य प्रेमक आहुति
नवजात शिशुक त्याग
की एक्कहु बेर करेज नहि काँपल ?

जाल बिछाओल माछ लेल
किंवा अर्थ, प्रभुता, मद-मोह लेल
फँसि त' गेलाह कामी राजा
अहाँ हुनक कामावेगकेँ
अपन भविष्य सुरक्षित करक
बाट बुझैत रहलहुँ
मुदा ई त' बाजू
यौवनक समर्पणक तोष
कहियो पाबि सकलहुँ ?

योग्य युवराजकेँ अवडेरब
ओकर अधिकार पर झपट्टा मारब
एतबहि नहि,
ओकर भविष्य धरि कुण्डली मारब
की प्राप्ति भेल ?
दुइ गोट बेटा
एकटा शक्तिक मदमे चूर, दोसर निशाँमे
डूमल
दूनूक परान अपटी खेतमे नहि गेल ?
केओ बाँचल कुल- दीपक ?

उधारक तेलसँ
वंशक डिबिया बारैत रहलहुँ
तैं केओ आंखिक संग वासनासँ आन्हर
केओ स्वास्थ्य आ पुरुषत्वसँ हीन
केओ त' नौड़ीक कोखिक जन्मल !
कोन वंश, कोन कुल लेल एतेक हाहि ?

की सत्ते अहाँक मोनमे छल ई कुण्ठा
कोनो क्षत्रियक संतति होइतो
मलाहक घर पोसयलहुँ
मुदा एकर प्रमाण की
बिनु प्रमाणे ई आक्रोश कियै ?

कानीन शिशुक जन्मक बादो
रहलहुँ अक्षतकुमारि
युवा मुनिक निर्मल प्रेमक चिता पर
राजसुखक टेमी बारलहुँ !

माछक गन्धमे डूमल अहाँक आत्मा
पद्मवनक सुगन्धि बुझितय कोना ?
सभहक दुर्भाग्यक छार-भार अहींक कपार
मुनिक प्रेमक तिरस्कार
शिशुक वात्सल्यक अपहार
राजाक पौरुष पर लगाओल ग्रहण
युवराजक अधिकारक अधिग्रहण
कुमार्ग पर पुत्रक गमन
पुतहुक अभिशप्त यौवनक वन्ध्याकरण
नियोगक नामे बलात्कार
अहींक पापेँ त' अनेक पुरुषक शिकार
अम्बिका, अम्बालिका, कुन्ती, माद्री, पांचाली !

कृष्णकेँ अयबाके छलनि
ओ अयबो केलाह
मुदा वंशी बजबए नहि
वंशक नाश पर सान्त्वना देमए
पुत्र गमा चुकल मायक नोर पोछए
पतिविहीन स्त्रीक माथ पर हाथ राखए
पुत्रशोकविह्वल माताक श्राप दूर करए
क्रोधान्ध पिताक वज्राग्निसँ रक्षा करए !

मुदा अहाँ किछु बजबै
पराशरक देहक संपर्कोमे
तृप्ति नहि
व्यासक निर्मल आश्रयक छाहरियोमे
त' निन्न टूटल होयत ?

अहीं त' छी मूलमे

डूमल छल काशी उत्सवमे
किऐक नहि डूमैत
स्वयंवरक आयोजन जे छलैक।

देश- विदेशक राजासँ सजल सभागार
रतिस्वरूपा राजकुँवरि
राजाक आनन पर दमकैत आनन्द
आहूत अतिथिक हृदयक बढ़ैत कम्प
कोन तीन गोट पुरुष होयताह भाग्यक बली !

अम्बा मुदित छलीह,
मदिर- मधुर कल्पनामे
पोर- पोर भीजल
आबि गेल सुदिन, आब मिझायत विरहाग्नि
अओता प्रियतम अधीर-आकुल
आ हम लाजेँ मूड़ी निहुरौने
पहिरा देबनि वरमाला
ओ क्षण होयत पूर्णताक
सौंदर्य आ पुरुषत्वक संयोगक
कल्पना आ यथार्थक मिलनक
पिताक आशीष आ समाजक शुभेच्छा
संग शुरूह करब नव जीवन
छिटकल ज्योत्स्नामे दुइ हृदयक मिलन
ओह, कंटकित भए गेलनि सर्वांग।

दुइ बहिनीक चेहरा पर मुस्की
सखी पाछूसँ कटलकनि चुट्टी
हे मन, धीर धरू
उत्कण्ठा संयमित करू
समुचित समयक प्रतीक्षा
ओह, एना बेकहल कियैक भेल मनक वेग
आब देरी कथीक, बाजत शंखध्वनि
राजाक भ्रू-निक्षेप संग बढ़ायब हम डेग।

आ कि तखने तुमुल रव !
युद्ध-सज्जित भीष्म
देखैते- देखैत तीनू कन्याक बलात् अपहरण
कल्पनाक आकाशसँ ऊबड़-खाबड़ भूमि पर
हठाते पतन !
आह! राजतन्त्रक ई दारुण बल-प्रदर्शन !

नहि करब हम विवाह, मोनमे बैसल छथि शाल्व
सत्य कहू वीर!की होयत ई स्वीकार्य ?

न ओ गहलनि पाणि जे हरण कएलनि
न ओ, जनिका लेल आनल गेलहुँ
आ न ओ
जनिकर प्रेम पर छल अगाध विश्वास।

ओहि एक क्षणमे
सभटा भेल भूमिसात्
प्रेमक स्थान पर अहम् सँ साक्षात्कार
अपमानित भूलुण्ठित स्त्रीत्व

डगराक बैगन जकाँ गुड़कैत
बौआइत रहलहुँ, न्यायक गोहारि लगबैत रहलहुँ
मुदा के होयत ठाढ़ शक्तिमन्त लग
लाञ्छिता स्त्रीक जीवन बरु नष्ट होउ
मान पददलित होउ
गुरु परशुराम धरि दण्ड नहि द' सकलाह !

आ हम एकटा सुकुमारि कन्या!
मृदु भावक दय तिलाञ्जलि
बनि गेलहुँ प्रतिशोधक ज्वाला
अम्बासँ भीष्मा, भीष्मासँ शिविका
ओतयसँ शिखण्डी धरिक यात्रा करैत रहलहुँ
तीन जन्म धरि!

किऐक, सोचलक समाज
प्रतिहिंसाक अग्नि मिझौलक?
नहि!
स्त्री छलि उपादान मात्र
वासना-संतृप्तिक, शौर्यक प्रदर्शनक
संतति -प्रजननक
विलासी कामुक राजकुंवरक
प्रकृत-विकृत यौनैषणाक निर्जीव सन खेलौना !

हँ, हम अस्वीकारल ई सत्य
अंत करब ओहि ढोंगीक अहङ्कार
राजत्वक कदर्य बेवहार
अनीतिक चहुँदिसि पसरल जाल
पुञ्जीभूत अनाचारक आनब हम काट !

भयभीत नहि छी हम,
पलायन नहि छी करैत
हम पुनः जन्म लेब, शक्ति सञ्चय करब
आ बनि जायब हेतु अहाँक विनाशक
कुरुकुलक सर्वनाशक
एहन समाज बाँचिएक' की करत
जतय ने नियम, ने मर्यादा
मात्र अछि हाहि
शक्तिक, भोगक, राज्यक
अनन्त लालसा !

हम भीष्मा, चेतौनी दैत छी
आयब शीघ्र, विनष्ट करब सभ किछु
जाहि सिंहासनसँ जकड़ल अछि
अहाँक चेतना, कुण्ठित भेल विवेक
आकण्ठ पङ्किल भेल हस्तिनापुर
चरम पतन देखब फूजल आंखि
तखनो त' सोचब,
सभ अनाचार क मूलमे
अहीं त' छी !

गरलक ग्रास

अपहृत होयब, मात्र शरीरक नहि
मान-सम्मानक, अस्मिता ओ इच्छाक
भावनाक हिलोरक ठामहिँ जमि जायब
आ दासत्वक विवश स्वीकरणे त' !

ई थिक बर्बरताक निर्लज्ज घोष
शासनक नाम पर शोषण
शक्तिक मद, सामर्थ्यक विकृत प्रदर्शन
सभ्यता-संस्कृति-शिक्षाक प्रकाशक लहाश पर
दानवताक भीषण अट्टहास !

तेँ मानदलित कए अननिहार
भीख जकाँ दोसराकेँ दैत अछि हमर शरीर
फेर
ई विवाहक नाटक किऐक ?

एक्कहि टा पुरुषक संग दुइ बहिनी
ओह केहन घृणित, जुगुप्सा-जनक
मुदा, के देत एहि अन्हरायल राजकुलकेँ
इजोतक एकहुटा किरण ?

मुदा ई केहेन अछि पुरुष
पुरुषो अछि की ?

जकरा अपना शक्ति नहि, शौर्य नहि,
शिक्षा वा संस्कार नहि !

माय द्वारा ओरिआयल राज
भाय द्वारा आनल स्त्री
ओकरहि द्वारा सुरक्षित कएल सीमा
तंत्रक नियमन लेल नियुक्त मंत्री
आ सभक स्वामी ई मद्यप,
स्त्री-संग-लोलुप
रुग्ण तन-मनक दुर्बल राजा !

की बूझल नहि छलनि राजमाताकेँ
पुत्रक दौर्बल्य
देवव्रत अनजान छलाह भाइक पौरुषसँ
राजवैद्य नहि पकड़ि सकल छलाह रोग
तेँ पापक भागी मात्र कुमारे नहि
संपूर्ण कौरव समाज अछि !

अनुताप -परिताप सहैत हम दूनू बहिन
अपमानक भीषण ज्वालामे धधकैत
बहिन अम्बाक छिन्न-भिन्न जीवन
भीष्म की रोकि लेताह सर्वनाश
अपन भुजबलसँ
सत्य कहैत छथि अम्बा
बाँचत क्यो नहि
निर्घृण अनाचारक कठोर परिणामसँ !

सभ पाप-पुण्यक केंद्रमे स्वयं स्त्री
स्त्री द्वारा स्त्रीएक तिरस्कार!

मद राजसत्ताक आन्हर कए दैत छै
आंखिसँ, विवेकसँ, बुद्धिसँ,
तर्क आ परिणामसँ
ओ मात्र पिबैत अछि विष,
पिअबैत अछि विष
भोर -साँझ जहर पीबा लेल विवश
निष्ठुर, कुत्सित चिंतनक चांगुरमे फंसलि
हँ, माय !
अहींक गरलक ग्रास हम तीनू बहिनी !

विनाशक पजेबा जोड़ैत गांधारी

भीष्मक प्रतिज्ञा
मात्र अपनहि नहि,
कतोक निर्दोषक बलिक कारण बनल
उपादान बनलीह
सुबल- सुता गांधारी।

पिताकेँ भय छलनि किंवा लोभ
रूपसी बेटी लेल आन्हर राजाक प्रस्ताव
समर्पण कएलनि पिता
पट्टी बन्हलनि पुत्री आजीवन
नहि बन्हितथि त' ओहि
दृष्टिहीन, कामी, लोलुप पुरुषक संग
जीबि सकैत छलीह कथमपि
गंधर्व गुण समन्विता रूपसी गांधारी !

कुरु-कुलक नीतिओ त' अजबे
हताश, खिन्न, असंतुष्ट स्त्रीक
ओहि भीड़क कारण
गंगासुत
युद्ध जीति, अकर्मण्य कुमारक लेल
अनैत छलाह सुंदर खेलौना
भरल छल अंत:पुर
जीति कए आनल राजकुँवरिसँ

सत्ते
शक्तिमन्तक दोषो पबैत अछि क्षमा !

विधि मुदा नहि सहैछ एतेक दम्भ
भरत-वंश-विध्वंस-मूल बनि
अयलीह गांधारी, आयल शकुनि
घात आ प्रतिघात चलैत रहल
अन्याय-मूल-तरु बढ़ैत रहल
राजभवनक भाग बनलि गान्धारी
राज्य आ सुत- स्नेहक अन्ध- पाशमे घेरायल
अथवा
कुरु-कुल-क्षयक लेल पजेबा जोड़ैत छलि !

शिवभक्तिन सुबल-सुताक आगमन
पापमे आकण्ठ डूमल कुरु-कुलक
सर्वनाशक हेतु बनल,
जकर चपेटामे अयलाह
कृष्णक वंशज सेहो श्रापक रूपमे।

बजार

काल्हि पेटमे कनेक दर्द भेल
रहि रहि होमए,
कखनो बेबर्दाश्त
कखनो कम
भेल, एक बेर डागदरसँ पूछिए ली
हल्लुके मोने गेलहुँ
ओ मुदा बड़ गंभीर स्वरें पुछलक
एसकर आयल छी?
से की, कोनो खास बात?
से त' परीक्षणक बादे कहि सकब
मुदा, हमरा बुझना जाइछ आंतमे इंफेक्शन न हो
ओहि काउंटर पर पाइ जमा करू

एवंक्रमेण छ: मास
अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे, कोलोनोस्कोपी,
एंडोस्कोपी, बायोप्सी
किछु बाकी नहि रहल
बेशी तर बासी मुँह, भरल मोन
भयानक आशंकाक जालमे ओझरायल

निस्तार भेल मुदा
निदान भेटल, खाली पेट नहि रहू
एक अंतराल पर किछु किछु खाउ

चलब सेहो जरूरी
गैस्ट्रिक जे भयानक अछि !

मुदा खाउ की?
नोकरी चल गेल अस्पतालक दौड़ -बड़हामे
जमाकेँ डॉक्टरक आ टेस्टक फीस निगलि गेल
आब की करब, न मरलहुँ, न जिबै छी
टुकुर टुकुर देखै छी
उपरका भगवान् आ
धरतीक भगवानक न्याय
जे बजार तर दबल अछि,
बजारे बनल अछि
वा बजार चमका रहल अछि
अहाँकेँ बूझल हुअय त' कहब !

रक्तबीजक भय

समूह जखन भीड़ बनि जाय
मन भयाक्रांत भए जाइछ
अंतर त’ बहुत नहि,
मुदा
समूह-भावनासँ असंभव
संभव भए जाइछ
जीतक स्वाद, प्राप्तिक तोष
सौंदर्यक फूल खिलि- खिलि उठैछ।

परञ्च भीड़!
ओएह जन-बल विध्वंसक बनि जाइछ
सभ्यता आ संस्कार भूमिसात्
बोध आ विवेक दूर .. बहुत दूर
नग्न पशुताक चिंघाड़
कानकेँ बहीर आ मस्तिष्क
शून्य बना जाइत अछि !

ई शून्यता, ई पशुता, ई विध्वंस
कोना ककरो प्रिय भए सकैछ?

जँ समूहभावना पर घृणाक कजरी जमैत देखिओ
रहैत छी चुप्प
ओहि आगिकेँ दैत छी हवा

स्वार्थ किंवा राजनीतिक
रोटी लेल चढ़बै छी तवा
तबाहीक अन्हरिया हेबे करत घुप्प !

एक्कहि दिनमे नहि उठैछ विनाशक उधबा
चिंगारी एकबैगे नहि बनैत अछि धधरा
द्वेषक बीआ छनहिमे बनैछ नहि गाछ
ई बुझितो जँ अहाँ लधने छी चुप्पी
होइछ भयानक ताण्डव
जे गीड़ि लैत अछि
जन, धन, मूल्य
आ शताब्दमे अर्जित सभ्यता आ संस्कृति।

उठबामे लगै अछि समय
धरि पतनक कोनो सीमा नहि
विचारणीय जँ नहि ई विषय
जे रुकब कतय, ठहरब कतय
आश्वस्तिक छाहरि पायब कतय
यैह भीड़ सहस्रमुख बनि
रक्तबीज बनि जायत
आ कालिकाक आह्वानक समय नहि बाँचत!

सपूत

धन खर्च करैमे व्यर्थ बिर्त छी
किऐ अहाँ बाबू कहियौ
घरहट लगाय की आब हयत
भेल वयस कतेक, बातो बुझियौ
अहाँ चलू नगर, सभ रहब संग
धन बचत, मोन नहि हयत तंग
ई अबरजात गामक सदिखन
हम सदति रहै छी भेल चंग।

नहि बाउ, एहन गप पुनि बाजह
पुरखाक बनाओल डीह हमर
जीबैत हमर ढहि ढनमनाओ
की उचित होयत?
तेँ छी लागल एहि घरहटमे
नव सृजन करब यदि संभव नहि
संरक्षण अबस(अवश्य)पार लागत
आब काजे की, खगता कथीक अछि संचय केर ?

पढ़ि- लिखि दुहू बनि गेलह योग्य
पद उच्च, ने दुर्लभ कोनो भोग्य
जीबह, जागह, सभ भोग करह
चिन्ता न करह हम्मर दुहूक
भगवान देने छथि एतेक विभव
नीकेना रहबै गामेमे।

घर होयत मरम्मति, पातरि देब
जँ पलखति हेतह आबि सकह
माँ-पिताक हिया जुड़ा जेतै
शिक्षित, सुसभ्य दुइ पूत देखि गामो बुझतै
हम कियै न गामक सुधि लेलहुँ।

दुइ बर्ख बितल, अयलाह बड़का
घर देखि अचम्भित भय उठलाह
बाबू, ई की हम देखि रहल
भनसीया संग नोकर- चाकर
गाड़ीक डिरैवर सेहो एतहि
रहइत अछि, भोजन से करैछ
ई खोलि सदाव्रत लुटा रहल छी द्रव्य
एकर छै कोन प्रयोजन कहि सकबै
दुइ पूत कि पोता- पोती हित
किछु रखबो करबै वा उड़ाय
युवकोक कान कटबे करबै ?

हौ बाउ, छदामो की तोहर
हम खर्च कयल बाजह कहियो
सभ दिन परिवारक खर्च लेल
तोरा सबहक शिक्षाक लेल
बनि कय मशीन कमबैत सदा
परदेश सेबने हम रहलहुँ
नहि स्वल्प ओकर अवसाद, किन्तु
दायित्व मुक्त निज जीवन हम
जीयब निज इच्छेँ,
दोष कोन एहिमे, तों कहि छह सकैत ?

आमद हम्मर, पेंशन हम्मर,
हम खर्च करी निज सुविधा लेल
तकरहु तोरा छह रोष एतेक
जीवन भरि दाबल देह- मोन
नहि आब मनोरथ मनहि रहत
तेँ सेवा शुल्क चुकैबामे कनियोँ नहि होइछ क्षोभ
कतहु !

दुइ बरखक बाद एलह एत्तय
छोटकाक न आबहु छै पलखति
देखय अयलह हम कतेक वृद्ध आ दीन बनल
मृत्युक आलिङ्गन हित तत्पर
सुख देखि पिताक पुत्र विह्वल
ई भाव मुदा बड़ चोट देलक !

चिन्ता न करह
नहि अमृत पीबि अयलहुँ धरती
हम, वा न अमर तोहर जननी
मरबे करबै, दैये जयब', नहि बहुत
मुदा तैंयों न थोड़
सभ जथा- पात एत्तहि रहतह
हम छी बुझैत बेचबे करबह,
मुइने न कोनो अंकुश रहतह
नहि मुदा उकन्नन डीह होमय
तेँ हेतु लिखल ई वास मात्र कुल पुरहितकेँ !

तामससँ पित्त चढ़ल पुत्रक
झट कटा टिकट, भागल मुम्बई
एहि बीच कतेको बरख बितल

घुरि ओ न ओकर अनुज आयल।
भुइ सेज बनल आइ पत्नी केर
आब होयत की, जीयब कोना
आतंक ततेक पैसल भीतर
तन वृद्ध, व्याधिसँ आधि अधिक
कय होश वकील बजा तत्क्षण
संपत्ति कयलनि आश्रमक नाम
रहि सकथि जतय ओ मातु-पिता
जनिकर न कोनो छनि देखबैया
उड़ि गेल पंख भेने सपूत
नहि ल'ग कोनो छनि घरबैया।

मिसिया भरि ज्योति

स्वप्न छल अथवा
कि अविकल सत्य नहि ई बूझि पौलहुँ।
ठाढ़ देखल कोन धेने
तेज केर छल पुञ्ज सन
नर वा कि कोनो देवता
कहि नहि सकै छी!
चुम्मक संगे हम लौह
उत्सुक भए खिंचायल ल'ग गेलहुँ।

सम्भ्रमित हम पूछि बैसल
देव!छी के, ओ प्रयोजन की
कहू उत्सुक बहुत हम
कोन सेवा कए सकै छी
श्वास एकहि
प्रश्न पूछक कए उपक्रम, पुनि विरमलहुँ।

स्वर सुनायल-'नहि चिन्है छी
कियै चीन्हब, छी मनुज
काज भेने बिसरि जायब
ग्रहणकेँ करणीय मानब
थिक प्रगति केर चेन्ह'-
सुनि स्वर तीक्ष्ण सत्ते अकबकेलहुँ।

अभियोग नहि मानव !
मुदा ई चालि केहन
अन्याय केर सीमा न छाड़ल
नद, नदी, गिरि, वन कटल, हम काहि काटल
नियम अनुशासन प्रकृति केर उनटि
अजगुत प्रश्न कएलहुँ-
के अहाँ?

हम प्रकृति, हम सूर्य
जल, वन अग्नि, क्षिति, वारिद हमहीं
कतेक देलहुँ आर दै छी घाओ
पुनि किछु बुन्न अर्घ्यक दए
स्वयंकेँ मुदित आ कृतकृत्य बुझलहुँ।

भानुजामे फेन लदबद
वायुमे मिथेन जहरक
ग्लेशियर पिघलैत असमय
मेघ फाटब समय-कुसमय
संतुलन प्राणी-प्रकृति केर भेल खण्डित,
तदपि नहि किछु बूझि सकलहुँ ?

अर्घ्य देब अभीष्ट यदि मनुपुत्र !
सर्वविध आरोग्य जँ अछि इष्ट
गुणधर्म प्रकृतिक एक भागो
लए, ग्रहण नहि, त्याग सीखू
कहिते विलोपित भेल तेजक पुञ्ज,
हम झट आंखि फोललहुँ।

पतिदेवसँ कएलहुँ नेहोरा
प्लाट जे दोसर ओतय हम भवन नहि
गाछी लगायब
सबल कारण बिनु हवामे जहर नहि कखनहुँ
मिलायब
कठहँसी हँसि बाजि उठलाह
कण- कण प्रदूषित वायुमे दुइ गाछसँ तेहाइ तारब
मुदा नहि हम हारि मानलहुँ
लेसि दीपक एक मिसिया ज्योति केर
संकल्प लय हम छठि मनौलहुँ।

धोन्हि

सत्य थिक की आर की मिथ्या कोनो मानक कतए
आंखि सोझाँ धोन्हि पसरल, एक नहि सभहक ओतए
मद केहन कहियो न पाबी, चेतना हरलक सभहक
नयन रक्तिम, श्वास ऊर्ध्वग, इन्द्रियक मूर्च्छा जतए।

मूर्च्छनामे शान्ति केर भ्रम, अमिय वा विष बोध ककरा
ई हमर, केवल हमर, लिलसा अपरिमित, अछि न पहरा
ई धरित्री, चान सेहो हमर, थमि किछु आर आगाँ
व्योम केर सभटा रहस्यक पार पायब हमर सपना।

बोध नहि की की हेरायल, दृष्टि स्वजनक भेल पाथर
असल सुख वा भ्रम मनोहर, रेख मध्यक एतेक पातर
शुद्धि रक्तक भेल दुर्लभ, छै 'इथाइल' प्रबल सभ रग
दंभ, ईर्ष्या, अहम्, लोभक पिंड थिक मानव, कि पामर !

नहि प्रदूषण वायु टा मे, बद्ध चिन्तन धारणामे
श्वासमे, प्रश्वासमे कलुषित हृदय केर भावनामे
खिन्न मन अनुदारता लखि, नहि तदपि व्यापित निराशा
चलि रहल अनथक हमर पग, भोर केर संभावनामे।

बिरथा

जितिया कए बेटे टा पयबा केर बेगरता जँ
बड़द जकाँ बेटा केर मोलक सेहन्ता जँ
बहुआसिन पर शासन केर मोनोमे लिलसा जँ
बेटा केर सासुरसँ चीजक छनि खगता जँ
डिग्री ई बड़कीटा, बहिन दाइ! बिरथा छनि।

पनरह दिन अनोना आ अरबा अरबाइन केर
पुतहु हमर, व्रत-जात आंखि मूनि करथु फेर
सासुरे वा स्वर्गे धीया, उपदेश देल बेर- बेर
जाति-पाँजि मानवतासँ नीक एहन भ्रान्ति घेर
छनिहें जँ किटी क्लब, बहिन दाइ! बिरथा छनि।

शिक्षासँ बेशी विभवक आकर्षणजँ
भिक्षासँ अधिके प्रदर्शन छनि आन्तरजँ
देबा आ लेबासँ सम्बन्धक तुलना जँ
अपना लेल अरबा आ सेवक लेल उसना जँ
पैघत्वक बोध तखन, बहिन दाइ! बिरथा छनि।

अपटुडेट बनाओल अछि शिक्षित कय धीयाकेँ
हरखित म'न देखल अछि लहलहाइत बीआकेँ
रीति -नीति धेने मुदा मग्गज जँ पजियाके
चुनलक वर अपने वा तेजल निज पियाकेँ
बूझै छथि अनरथ जँ, पढ़ब लिखब बिरथा छनि।

विधवा केर रहन- सहन, चालि-चलन चर्चाजँ
शिक्षा नहि, श्राद्ध लेल लेलनि ई कर्जाजँ
अनटोटल अनुचित सहि, विरोधोमे, हर्जाजँ
कनियों छनि बेटीसँ पुतहुक कम दर्जाजँ
ऊपर सँ टीप टॉप, बहिन दाइ! बिरथा छनि।

लोकल

कवि! अछि बदलि गेल सभ गाम
कतेक दिन ठाढ़ रहब ओहि ठाम
ने कनियों छूति भाव -शृंगार,
न सीमित स्थानक मुकुलित हार
लिखू नहि भूख वा कि निज त्रास
न गामक पोखरि केर उद्धार
नदी केर बाँध कि फेकल गाद
सभक हो घेरल-बेढ़ल टाट
सड़ल चिंतन केर चिन्ता व्यर्थ
ओतए नहि बिलमू, बूझू अर्थ
परिधि केर करू आब विस्तार
असंशय भेटत कीर्ति अपार !
हयत कविवर! तखनहिँ निस्तार।

सुनू लिखियौ अमरीका नीति
ग्लोब पर रखियौ तिर्यक् दृष्टि
जँ बाँचय समय चीन-सीमान
बचाबैत यूक्रेनक से आन
रूस केर बढ़इत लिलसा- जाल
आणविक शक्तिक धमक विशाल
यमन, हैती, सोमालिया भूख
रहू उत्कल- मिथिला पर मूक !
न होमय कविवर! कत्तहु चूक।

रहब लेपटायल कोशी-कछेर
बाढ़ि कियै आयल बेर कुबेर
तन्त्र केर अक्षमता केर गान
भ्रष्ट जन-मन केर बढ़ल गुमान
कहै छी सत्त, सुनू कवि बात
न पूछत क्यो, रहबै अहाँ कात
रहक अछि वैश्विक कवि केर मध्य
परिधि तजियौ गद्यक वा पद्य
बनल कविता कविवर अछि भव्य
स्वयं कवि, कहियौ अतिशय श्रव्य !

सुनल कवि बहुत काल उपदेश
न हियमे रहलनि धीरज शेष
कियै धारण कयलह कवि-वेश
कि काव्यक तत्त्व बुझल लवलेश
भेल छह सत्ते मतिक विशेष
लगतह कखनो जोरगर ठेस
न पहिरह काबिल लोकक भेष !

कविता भावक थिक उद्रेक
छुबय जे पाठक उर प्रत्येक
रुचिर शब्दक संयोजन एक
बिम्ब, उपमा, भणिता वा टेक
शब्द कम अर्थ सुरम्य अनेक।

न किछु छह बूझल, चलबह जूति
न उरमे कनियों मूल्यक छूति
कतयसँ गयबह वैश्विक गान

न कोनो गत्र आन-अभिमान
सिबह तों मायक फाटल चीर
करह सभ यत्न हरक सभ पीर
तखन करिअह चर्चा सभ देश
रुदन वा हास्य हुअय सविशेष !

न ताकह दोष, बूझि तों अज्ञ
जतेक छह गर्व न छह तों विज्ञ
पैर तर छह न भूमि- आधार
कोना जयबह नभ केर तों पार
शिखर पर चढ़ी, न बिसरी मूल,
शान्ति सुख जलधिक शीतल कूल
उड़ै छह नीति-नियमसँ मुक्त
सदति हम सत्य-शील -संयुक्त
भनहिं हो लघुतम मम संसार
मुदा हिय गौरव, स्नेह अपार
लिखी नहि ग्लोबल कविता गीत
उचित बुझि रची मीठ वा तीत
गबै छी साँचे लोकल मीत !

पानि

इन्द्र वृष्टि- पानि देल, धरा आर्द्र-स्निग्ध भेल
किन्तु अधिक आंखि आइ, पानिसँ विहीन भेल
घाट-घाट पानि पीबि सतव्रती बिलाड़ि भेल
मूल्य नीति नष्ट भए, पिंड-पानि लीन भेल।

देखिते रही सुता पानि लेल घाट गेल
आसुरी कृत्य केर ओ ओतए ग्रास भेल
दग्ध हाड़ जांच केर परिधिकेर पार गेल
पानि-पानि मनुष्यता कोन धए ठाढ़ भेल।

प्रभु बनल पैघ लोक स्वानुकूल नियम रचल
वैर-बीज रोपि ओकर गाछ दूरसँ लखल
अबल जन सगर आइ मूर सन विवश कटल
नीकदिनक आश पर, सर्द पानि पड़ि रहल।

उन्माद एक बल धेने सगर जग पसरि रहल
नाम धए स्वतन्त्रता, परक हक हड़पि रहल
स्वयम्भू बनि विधान नब- नब गढ़ि रहल
घैल भरि पानि आइ विवेक पर पड़ि रहल।

जान आइ पानि केर मोल अछि भए रहल
पानिमे आगि 'धर्म' नाम अछि लगा रहल।
सबजनीन क्षेत्र सभ निजी हाथ जा रहल
योजना विकास पर पानि फेरि अछि रहल।

बेचि- बेचि अर्थ-मेरु खुक्ख अछि कए रहल
काँच घैल पानि विवश निरीह जन भरि रहल
बिसरि शील नेतृवर्ग कुकुरकटाउझ कए रहल
चुरू भरि पानिमे, डुमक हेतु बनि रहल।

पानि जकाँ पाइ जे लगा चुकल विदेशमे
तजि देलक आइ हन्त! किन्तु बीच धारमे
चर्च यूक्रेन-रूस विश्व भरि भए रहल
मित्र -भाव सभ जगह अन्न-पानि तजि रहल।

अछि अमोल, किन्तु आजु पानि अछि उतरि रहल
सोन वा कि पीत धातु, भेद अछि मेटा रहल
पानि पीबि गारि दैत नहि कोनो लाभ बन्धु
सत्य ई कि मनुष्यताक अन्न-पानि उठि चुकल।

खेला

मारि रहल अछि झटहा सगरो, कोनहुटा लगबे करतै
डम्हक हो अथवा अजोह फल ओ अवश्य खसबे करतै

कियै करी बाबा पोखरिमे कजरी लगल, तकर चिन्ता
जतेक माछ उपरत बेसाहि क' आमद त' बढ़बे करतै।

हमर पितामह संस्कृत- शिक्षित, संस्कृति कोना उच्च होयतनि
हावी अछि पाश्चात्य, प्राच्य केर आइ उपेक्षा के रोकतै।

मातु कियै अनकर दारा छै, अनकर द्रव्य कियै ढेला
हो उमेद धन वा कामिनि केर, मूढ़े टा ओकरा तजतै।

विजयामे की दोष, मुदा धरि मदिरा कोना ग्राह्य होयतै
माछक मूड़ा स्वादि ओही मुख अपर मांस वर्जित करतै।

जानि बूझि हिंसा-अपशब्दक लुत्ती लेसि कात बैसय
ओहि धधरामे स्वार्थ सिद्ध कए शुचिता केर सम्पुट करतै।

साम्यवाद केर उच्च विचारक भाषण बेधक, मर्म छुबय
ओतहि धनिक लेल नाना व्यञ्जन, उगरल जे, सेवक खेतै।

वैश्विकता अनघोल करय, अछि सीमा, कोन चिड़ैयाँ
पाएरक नीचाँ भूमि ने हो बरु, नभमे भवन बनेतै।

बाट कोन चलबाक जोग थिक बूझल हो वा नहि हो
मातल जग सगरो जखने ओ झिल्लरि कियै न खेलतै।

हम देखल- भोगल जँ सुख नहि, हमर नेत्र केर दोष
नीलकण्ठ आने क्यो बनता, हमर घैल अमृत भरतै।

किन्तु होउ जुनि बन्धु मलिन-मुख, ई सभ सतही खेला
प्रखर प्रकाश उषाक न कथमपि भगजोगनी परतर करतै।

असिधार

व्यथित- सुप्त मन पर प्रश्नक अहाँ मारि रहल छी कियै तीर
सामान्य न छी हम, छी विशिष्ट, पति रक्षक देशक छलाह वीर।

ई देश, सुरक्षित सीमा हो, दिन- राति भेल रहलथि अधीर !
छल संग मास- मात्रक हम्मर, रक्षा करइत भेलथि शहीद।

सकलहुँ न कानि हम चिकरि- चिकरि, मानल जाइत ओ दुर्बलता
अनमोल शहादत पतिक कियै, कए न्यून, लितहुँ हम परक दया।

ओ तोप, सलामी हुनक शवक, चढ़ि गेलहुँ हम गौरव-रथ पर
टुकुर-टुकुर देखैत सकल, हम वज्र धए लेलहुँ निज उर पर ।

नहि बहुत समय ई मान सेहो पायब छल हम्मर भाग्य लिखल
विकराल भूख केर ज्वालासँ, संघर्ष हमर बाकी अविकल।

वृद्ध पिता-माता पति केर, तजि कोना दु:खक अम्बुधि डुमितहुँ
आ गर्भ मध्य पलि रहल भ्रूण, नव कष्ट कोना नहि हम सहितहुँ।

सत कही कि, नहि इच्छा कनियोँ, सुत कौखन सेना दिसि ताकय
हमरहि भाँति कोनो ललना बनि मूर्ति, साँस लेबो बिसरय।

दिव्य नाम, यशसँ न तृषा तन- मन केर होइछ शान्त हाय !
ओ दिन पहाड़ सन, राति करौट फेरैत कठिन बेचैन बीतय।

पाबैछ वीरगति एक किन्तु जरइछ लहाश सभ परिजन केर
भोगैछ दंश धीरे-धीरे बिनु पुरल अनेकों इच्छा केर ।

हम हँसी कि कानी, पल निजी स्वल्प, किछुओ नहि होइछ सुलभ मुदा
समतल पर जीयब भाग्य कतए जिनगी असि धार बितैछ सदा।

बखिया

सखि तोर केहन दीब ई बखिया
कोन यन्त्र कए सकत कहू त' एतेक नीकसँ सिबिया
खींचि- नमारि जाँचि ली तखनो फुजत न तागक बखिया
सखि, तोर अद्भुत पुरना सिखिया !

हम पैसाबी धैर्यक तागा, तखन चलाबी सुइया
फटल- पुरान झाँपि दढ़गरसँ सीबी सुजनी दइया
नापि- जोखि टाँका दए नुकबी भरल अभाव मड़इया
सखि, की कहियह अपन बिपतिया !

कोना न बुझबै तों सीबै छह गेदली कटय जड़इया
कमी कतेक तों लूरिसँ झँपने बुझथि न बाबू-भैया
निशा-दिवस एहि जुगुतमे कहुना जाइ अभाव कसइया
सखि, हम बूझी झाँपल बतिया !

किन्तु हठाते केहन उठल ई सगर मशीन- उजहिया
मान बचल जाहि श्रमसँ, काटय आजु ओएह बपहिया
कतए गेल साबिक केर अद्भुत, सुन्दर लिखिया-पढ़िया
कहु के सीखत मेलक बखिया।

रौद बसात, झाँट -झाखड़ सहि टुटलै हमर मड़इया
बूढ़ पुरनियाँ पूछय नहि केओ अजब बिहाड़ि बतहिया
टर-टर कए अपने गुण भाखय जेहने बेंग भदइया
सखि के सीखत पुरना बखिया ?

अगम प्रकृति

किछु प्रश्न उठै अछि सदति मोन, अधलाह हमर की आदति अछि
सभ लोक विचित्र नजरि देखथि, उर ग्लानि-भार सँ भरइत अछि।

अनके सन हमहूँ पढ़ी लिखी, निज जीवन पथ पर बढ़इत छी
व्याघात बिना हम जीबि सकी, किछु एहने उद्यम करइत छी।

कर्तव्य सकल कय स्वजन संगे हम जीबै छी प्रतिपल सहर्ष
श्रमशील सदा, मनतोष हेतु विद्वज्जन संग होइत अछि विमर्श।

गुण हमर वा कि पद प्रिय किन्तु सभ मिलि निजता मम तोड़ै छथि
छै बन्न केबाड़क पट परञ्च, कोनटा धए सदिखन हुलकै छथि।

मैत्री हम्मर नहि वैधानिक, आरोप अवाञ्छित सूनै छी
ओ छथि विशिष्ट, हम असामान्य, ई भाव सभक मुख देखै छी।

ई प्रकृति अगम, सभ नियम एक बुड़बक! कौखन नहि होइत अछि
तेँ भिन्न सोच, बेवहार तदर्थे जगमे देखना जाइत अछि।

जाधरि अनुशासनमे बान्हल, पीड़ा नहि ककरो देलहुँ अछि
छी पाछु कियैक हम्मर धेने, ई शिष्टाचार न कहबै अछि।

कुत्सित न विचित्र हमर आदति प्रिय! आंखि फाड़ि कियै देखै छी
अहाँ अनधिकार दोसर घ'रमे उद्धत अशिष्ट कियै हुलकै छी।

मैथिल

जँ निज प्रज्ञा, सृजनकर्ममे चुप भए मैथिल लगबए
बुद्धि- वैभवक अनुपम परिचय, तत्क्षण जगकेँ भेटए
किन्तु स्वयंकेँ बूझि विधाता, अपनहिं दर्पेँ मातल
ओ परदोषक अन्वेषणमे, बिरथा समय गमाबए।

बहुत खेलहुँ तिलकोर, माछ केर मूड़ा- वर्णन बहुतहि
पान गिलौरी कल्ला तर धए, गपक चिरौरी फुसियहि
कतए पाग राखल बचाय कए, माछ मखानक पोखरि
बाबा अरजल धन- विद्या आ, ढनमनाएल अछि देहरि।

विद्या ओएह सार्थिका, विनयक भूषण जे नरकेँ दै
वृक्ष फलक भारोक वहन कए निज शिर खूब नमाबै
तखन कियै पुस्तकी- ज्ञान सम्पन्न नरक ई खेला
परक गुणो बड़ दोष बनल अछि, सत्ते अजगुत लीला।

झालि अतीतक कतेक बजायब, वर्तमानकेँ सजबू
वर्णन शीलक बहुत भेल, किछु कर्मरूपमे आनू
इतिहासक तटस्थ मनन कए नीर-क्षीर- गुण साजू
कए फराक दूहूक, तखन पुनि निज विवेकसँ बाजू।

निज संस्कृतिक उन्नयन हेतु जँ तन-मन-अर्पण करितहुँ
जे किछु भेटल, ताहिसँ ऊपर, जा कए नाम बढ़बितहुँ
के की कएलक, तजि जँ केवल निज कर्त्तव्य सुमिरितहुँ
स्वर्णाक्षरमे मिथिक नाम अहाँ विश्व पटल पर देखितहुँ।

खिड़की परक कियै हुलकै छी, नहि घर आओत प्रकाश
निज भाषा-प्रगतिक पथ पायब, शीतल मधुर बतास
समय स्वल्प, दायित्व बहुत अछि, बन्धु कतए अवकाश
सभ केओ अपन- अपन कर्तव्यें, नापि लिय' आकाश।

कुपोषण

निर्धनता के भजा- भजा किछु लोक भेलै धनमन्त
किन्तु गरीबी आइयो ओहिना, ओम्हर बढ़ल श्रीमन्त
छल-बल केर ओ खेल पसारल, सभ बूझय बलवन्त
सुरसा जकाँ समस्या- मुख अछि कतए गेलौं हनुमन्त ?

कतेक बिपति हम कहू कि जीवन औखन निपट अन्हार
बदलि- बदलि प्रतिनिधि हम चूनल, स्याहे किन्तु कपार
कष्टक पर्वत संग व्याधिकेर, कतौ न, किछु उपचार
आब सहल नहि जाइछ भगवन्!हयत कोना निस्तार ?

रोटी नून खुआ पठबै छी हम शिशुकेँ विद्यालय
पोषण पाठ पढ़ैछ ओतए, कुहरैत अबै अछि आलय
ओकर आंखि देखी हम रोषक असंतोष केर ज्वाल
हहरि रहल हिय शंकित सदिखन, करै न कतहु बवाल।

नहि अछि आय-उपाय कि, संतति हमर पबै संतोष
ककरो थाल सजल व्यंजन लखि, बुझय कपारक दोष
ई वैषम्य न भोजन धरि, सभ क्षेत्र कुपोषित भेदेँ
नोन घाव पर पड़इछ, समता घोष सुनी जँ सगरे ।

आब न छै बर्दाश्त कि सहतै हमरे जकाँ विषमता
भगवानक इच्छा कहि, दीरघ साँसें, पिबय विकलता
नहि पौतै अधिकार त' छिनबा लेल समुद्यत सदिखन
स्थिति कियैक ई, नहि बुझबा लेल केओ तत्पर अछि औखन।

जुनि छोड़ू कसरि लव

कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव
न व्यापित कोनो भय, निर्द्वन्द्व हो भव।
जतए जे कमी अछि, ओकर सत्य बाजू
निर्भय प्रगति-पथ अनवरोध साजू
सजय माथ मायक, उद्यम होमए तव,
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

अहम् जे हुनक अछि, ओकर घेर तोड़ू
हमरहि बले छी, हमर हित न जारू
विश्वासहन्ता! लज्जा कि कोनो
गत्रेँ, कोना हम बिगाड़ल सम्हारू
जाज्वल्य तेजक आकर अहाँ भव
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

बन्हन गुलामीक टूटल जे आंग्लक
टघरल सगर छल शोणित शहीदक
गरम वा नरम दल असह पीर सहलनि
जिंजिर टुटल, वायु सिहकल इजोरक
रोकू कोनो विधि अनीतिक तुमुल रव
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

पचहत्तरि बरस की कम अछि कहू ने
गरीबक रुदन ओ वधिर! किछु सुनू ने
किसानक दशा अछि कियै आइ दारुण

बिना वृत्ति युवकक हताशा देखू ने
उपेक्षित बहै अछि एखनो कियै शव
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

प्रजातन्त्र सरिपहुँ आयल की एखनहुँ
विरोधक स्वर अछि दबल की न एखनहुँ
उठौलक जे माथा, कुचक्रे फँसल नहि
हीरक जयन्तीक उल्लास तखनहुँ
तकै छथि विकल माए नवल दृष्टि, गौरव
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

प्रगति की, ककर, की सभहक वा कि स्वल्पक
ढहल भीत वैषम्य, शमित भूख सभहक
जन-जन-हृदयमे जमल आश न्यायक
अग-जगमे पसरल इजोतो भरोसक
जाधरि भेटय लक्ष्य, न बिलमू, रचू नव
कठिन अछि समय जुनि छोड़ू कसरि लव।

प्रकृति

सुनु स्वामी ! सहचर शब्दक की अछि अर्थ बुझल कने कहियौ त'
एक बेर अहम् केर घेर तोड़ि कने अनकहु मनकेँ पढ़ियौ त'।

भर्ता बनि गहलहुँ पाणि, मात्र की अन्नक भरण अपेक्षित छल
दुर्बल होइत तन - मनक हमर, नहि समानुभूति की वाञ्छित छल ?

हम अपन विसर्जित कयल सकल, नव बन्ध हृदयसँ बान्हल छल
नहि मात्र अहाँ, अरिजन-परिजन सभ अपन बूझि स्वीकारल छल।

नहि किन्तु बुझल छल अहाँ अपन अधिकारक तोषेँ मातल छी
थिक प्रेम अगम्य अहाँ खातिर, दायित्वो कनियों बुझने छी ?

छल सेतु मात्र काया हम्मर, बुझि पावन बन्ध नेहाल छलहुँ
जीवन-सन्ध्या बीतत सुखमय, दुपहर काजें बेहाल छलहुँ।

अछि ठाढ़ किन्तु अनजान जकाँ, सदिखन निज खोलें बन्न केओ
परिचिति न कनेको ओकर आंखि, नहि मोल हमर किछु काजक अछि।

ढारैत हमर जीवन बीतल सिकता पर तेलक खोज वृथा
ई पुरुष-प्रकृति होइछ अगम्य, कवि त्रिया कहथि सर्वथा मृषा।

युवजन! बजबह नव रणभेरी

युवजन! बजबह नव रणभेरी
आजु न शासक छह परदेशी
शीर्ष शिखर पर बैसल देशी
हड़पि रहल छौ किन्तु तोहर हक
हटबह शीघ्रहि अनयक ढेरी
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

कतेक शृंखला बन्हन बनि कए
लाभ-लोभ केर रूप बदलि कए
लत्ती तृष्णा नमहर भए कए
चतरल छारलक मोहक घेरी
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

बाँटि रहल छह धर्मक नामे
अगड़ा- पिछड़ा जातिक व्याजेँ
नियम- नीति कागद पर नीके
बनल शक्तिमन्तक धरि चेरी
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

तोरहु बनल लक्ष्य छह छोटे
डिग्री, पद, धन-वैभव काम्ये
भागि रहल छह तोँ आन्हर भए
देशक भल तव कर्म न हेरी
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

जन-जन पाबए भोजन शिक्षा
ककरहु कर नहि केओ दए भिक्षा
बाल, वृद्ध, नर-नारि-सुरक्षा
नहि कत्तहु शोषण केर फेरी
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

सावधान! हे नेतृवर्ग! तोँ सम्हरि बढ़ाबह डेग
कदाचार मिटबय हम अयलहुँ, देखह हम्मर वेग
कहि रहलहुँ अछि नहि कौखन अधिकार हमर अबडेरी
छोट छोट बाधा-विपदाकेँ नहि किञ्चित् हम टेरी
बजबै छी सभ मिलि कए देखह, आइ तुमुल रणभेरी।
युवजन!बजबह नव रणभेरी।

मन मोर

औना रहल मन छल हमर मुनहारि साँझक बेरमे
प्रतिदिन जकाँ सोचैत रहलहुँ की भेटल एहि खेलमे
कहि रहल छी तीव्र स्वरमे हमरहि बलेँ माँ मैथिली
जँ हम न, रहितथि ओ फँसल प्राचीन न्यासक घेरमे।

हे सुनि लिय' मानक हमर पर जे लिखब, मानो भेटत
जँ कय सपरतिब, तर्क कय निज मन लिखब, तानो भेटत
कटि- कुच लिखू, प्रिय लेल कानू, हम हसोथब प्रेमसँ
निज सुख, कि निज आहतमनक पीड़ा लिखब, ज्ञानो भेटत।

अहाँ आबि गेलहुँ सजि- सँवरि बाहर कि ई पर्याप्त नहि
कविता लिखब, गीतो करब होइत जँ रहितहुँ आप्त नहि
शयनकक्षक उचित- अनुचित गप लिखब, साधंस ई !
बेश, कवि शृंगार लिखता, उढ़रब अहँक, बर्दाश्त नहि।

उन्मुक्तता उपहार भेटत जँ लिखब प्रतिकूल किछु
असहिष्णु जँ, अनघोल करबै न्याय आ अन्याय किछु
स्त्रैण गप! साहित्य केर गरिमा खसल पातालमे
'इला' नहि श्रद्धाक अर्पण काम्य, नहि बेताल किछु।

सुनि रहल चुपचाप मन, हँसि कए रहल उपहास सन
गार्गीक द्युतिकेँ कए स्मरण, गति बढ़ि पवन उनचास सन
भूख, पीड़ा, आधि-व्याधिक हो निवारण, लिखि रुकब
प्रगति अनथक लखि जखन नाचत सभहक मन मोर सन।

ताण्डव

ककर अहम् दारुण विध्वंसक, के ककरा ललकारि रहल
काटि कुम्हर बतिया सन जनकेँ, मदमत्तक तरुआरि रहल।
नेना भुटका से वयस्क सम कठिन काल केर ग्रास बनल
जे बाँचल ओ, क्षुधा-पिपासा, रोग-व्याधि विकराल सहल।

ककर दोख सँ उभयपक्ष केर जनता धन-जन सुख तेजल
पिता, पुत्र, भ्राता, पति, प्रेमी कतए सभक अस्तित्व मेटल।
कहब कठिन, केहि विधि रण केर ई रौरव नरकक भोग मेटत
शान्तिजलक सिञ्चन करैत के तबधल भू केर पीर हरत ?

कतबहु दम्भ अहाँक किन्तु की पीबि अमृत भू पर अयलहुँ
छाड़ि विकासक पथ अवनति केर गर्त पैसि अनभल कयलहुँ
मूढ़!केओ युद्धक मादेँ की कीर्ति शिखर पर पहुँचल अछि
रक्तक कुण्ड बना धरतीकेँ, लहलह फसलि उगौने अछि?

शान्ति श्रेय, बन्धुता जीवनक गति, श्वासक सहचर करुणा
रक्तपात भीषण तजि, आबहु मेलक सिरजू न'ब अंगना
सुमिरू, रण-विजयी, एकाकी, परिजनहीन, व्यथित पाण्डव
सकल विश्व भए सावधान, गति त्वरित रोकि ली ई ताण्डव।

विवशता

करुण पीर निश्चय जनकक जे, सुत वा सुता रहै छनि दूर
बनल यन्त्र निशिदिन यापै ओ, खगता किन्तु न होइछ पूर
फैल घरक आदति मायक छनि, रहथि ने मासो कहियो संग
ककरा कही, सही तेँ निशबद, पीर कुठामक जेना गूड़।

जँ आवेशेँ निश्चय कय ली, मासदिवस रहबै हम गाम
गाछी-बिरछी, हत्ता- पैरा, तकबै बाल्यकाल अभिराम
दरमाहा ओहि मासक शून्ये, टिकट- सनेसेँ दुन्ना खर्च
बॉसक तिर्यक भृकुटि फराके, जाड़ोमे चुबबै अछि घाम।

सधल न ऋण उपनयनक अखनो, फ्लैटक किस्तक भिन्ने ताल
स्कूलक फीस, बसक भाड़ो त' बढ़िते जाइछ सालो साल
दुहू जीव मिलि कोल्हु बड़द सम, खींचि रहल छी भारी भार
वाजिब उलहन, किन्तु कहू त', कोना पड़ैयै तजि ई जाल ?

बहुत कठिन तप माय पढ़ओलनि आइ कहाबी हम किछुओ
जनक हमर सभ खगता बूझथि, सदा पुराबथि बिनु कहनो
मातु-पिता सेवासँ वञ्चित, हतभागी हम, दैवो बाम
दायित्वक दुस्सह कारामे बन्न, छुटल तेँ चरणक धाम।

चेतौनी

अनुनय न निवेदन कोनो रूप, अहाँ आइ चेतौनी हमर सुनू
परंपराक व्याजेँ हड़पल हक, छीनि लेब निश्चय बूझू।

जँ दृष्टि कुदृष्टिक रूप धरत, नहि आंखि रहत किछु देखि सकब
हम शिवा रूप धय काली केर, अन्यायी- वक्षक दलन करब ।

बिनु इच्छा तनकेँ स्पर्श करक दुस्साहस कय जुनि भूल करी
जाहि अंग बलेँ आफन तोड़ी, विच्छिन्न करब, निश्चय बुझी।

स्वामी न बनू मम तन- मन केर, सहचरक अपेक्षा हमरा अछि
चिन्तन सामन्ती जँ देखब, विच्छेदक हक सेहो हमरा अछि।

हम कोना रही, हम कतए जाय, संबंध- बन्ध हम स्वयं चुनब
निज भूषा जीवन-शैली पर हम अनधिकार नहि टोक सहब।

कोमल अवश्य छी सुमनजकाँ, सौरभ सुन्दरता हमर प्रकृति
पाषाण किन्तु बनि आइ गेलहुँ, कामक जँ भोगल असह विकृति।

नहि नयन प्रेमरस वृष्टि करय, अछि वक्ष बनल अग्निक आकर
हम हाथ नेने छी खड्ग प्रखर, सत्वर विनष्ट होयत पामर।

नागिन

हो कामक आवेग, कि परिणति बलात्कार केर होमए ई
सहानुभूति!नहि किन्नहुँ, थिक अति निष्ठुर हियक निदर्शन ई
स्त्रीक नाम पर थिक कलंक ओ, जे निज शिशुक भेल घाती
सर्पिणीक सम कृत्य घोर ई, कोना वज्र कयलहुँ छाती।

अपमानित- लांछित कए स्त्रीकेँ, कहू कोना संवेदन लेब
भेल समागम खेल बूझि जँ, पशुओ सम नहि करनी भेल
भेलहुँ यदि वासनाक ग्रास, बरजोरी कोनो नरपशु केर
नुका एहन अपराध कि प्रश्रय अनाचार केर ई नहि देल ?

छल दरिद्रता यदि बाधक भेल, पोषण कोना करब बालक
कियै न वन्ध्या कोर भरल, दए शिशुक दान होइत सार्थक
भय सम्मान-भंग केर, कुन्ती जकाँ हृदयमे उपजल जँ
एतबहि कहब, स्वार्थसँ चालित जीवन भेल बिना अर्थक।

कतेक करू निन्दा एहि कृत्यक, लाजो पतनुकान लेलक
मरण-रक्त-मुख देखि दानवी, भयसँ थर-थर उर कँपलक
मनुज-वेशमे भरल हलाहल नागिन! धिक्!छौ तोर जीवन
खसा गर्तमे जननि- नामकेँ, जीबें, गहबें वा कि मरण ?

रहब पुनि एकठामे

हम एकठाँ रहलहुँ, रहब पुनि एकठामे सदति यौ
वैर बीआ बाउगि कय, कोन फ'ल उगेबै बन्धु यौ
नहि उखाड़ू गड़ल मुर्दा, चैन छीनत गन्ध दुस्सह
जीवनक कनियों न पायब लेश, ओहिठाँ बन्धु यौ!

रक्त की ककरहु नसक होइ छैक उज्जर- श्याम की
ईश ककरहु, ओ कहै छथि ई अपन, ओ आन की
अयोध्या नहि लघु, वृहत् जनहित तजथि श्रीराम यौ !
शिव पिबथि विष, नहि होमय सुर आ असुर संग्राम यौ !

बहुत छै जगमे करक हित काज ओहि दिसि ध्यान अछि
भूख, रोग, वृत्ति, शिक्षा, शील, दिसि की कान अछि
जा रहल अछि गर्तमे संस्कृति, तकर ठेकान अछि
परसल घृणा लहाश पर, हरि लेत सभहक प्राण यौ !

की बुझल नहि, वैर कहियो शमित होइछ वैरसँ नहि
हम समृद्धिक एषणा निजसँ करै छी, गैरसँ नहि
धैर्यसँ तरणी तरै दुस्तर जलधि, अनधैर्यसँ नहि
प्रेम बिलहू जीवनक अछि सूत्र असली बन्धु यौ !

शक्ति भरि श्रम कय प्रगतिकेँ जीवनक सम्प्राप्य बूझू
शान्ति, स्नेहक लेपसँ उपचार विकृतिक काम्य बूझू
नहि निरर्थक जल्पना, नहि कागजी फुफकार मारू
रांगल सियारक निहित कुत्सित लक्ष्य चीन्हू बन्धु यौ !

आस्था

की थिक कठिन, सरल की अछि वा
तनक विषय कम, आत्मबलक अछि
जँ संकल्प अनामति श्रद्धा अडिग,
कठिनतम व्रत संभव अछि।

सूर्यक प्रखर तेज मोन धए
कर्ता पालक रूप स्मरण कए
प्राप्ति, रक्षणक हेतु मात्र रवि
उदय-अस्त क्षण शिर झुकबै अछि।

दीर्घ आयु भेटय संततिकेँ
लगै न ओकरा कुशक कलेप
मनहिँ अराधि जिमुतवाहनकेँ
जल बिनु तन तपबै अछि।

स्त्री-पुरुषक विमर्श ठाढ़ कए
अनुचित-उचितक तर्क प्रखर दए
आस्था पर विज्ञानक विजयक
माए न कखनहुँ कथा लिखै अछि।

अनुखन समता घोष करै अछि,
भौतिकीकेँ जग- हेतु बुझै अछि
किन्तु विकल सीदित मन सदिखन
प्रभुक द्वार गोहारि करैत अछि।

प्रकृति कही वा ईश, मुदा सर्वाङ्ग रहय विश्वास
खण्डित मन, ढुलमुल आस्थासँ भेटत केवल त्रास
बुद्धि जरूरी, ताहू सँ, बेशी हो मूल्यक भाव
तजि भय कांटक फूल गुलाबक बुझनुक जन उगबै अछि।

बुद्धि

तीक्ष्ण बुद्धिक अछि निदर्शन तैल सम पसरैत जे
स्वल्प यद्यपि, पसरि सगरो ज्ञानसँ भिजबैत छै
ज्वलन केर क्षमता त्वरित, मेधाक गति अद्भुत अहो
आचार्यसँ लय ज्ञान- लव, कय सहसगुण बाँटैत छै।

जँ सलाइक जरल काठी लग कपूरक अबै छै
ओ पजरि तत्क्षण, अपन सात्विक विभा देखबैत छै
बुद्धि उत्तम ओएह जे, तत्क्षण नवीनक कय ग्रहण
अपन प्रतिभा गुणित कए, जगकेँ चतुर्गुण दैत छै।

किन्तु जगमे बहुल जन, सामान्य अतिशय होइ छै
ज्ञान -ग्रहणक काल, किछु अधिके समय लगबैत छै
किन्तु जे पाओल, जतेको, टिकय कोयला- आगि सम
बहुत लोकक जाड़, ज्ञानक भूख ओ मिझबैत छै।

किन्तु किछु एहनो जेना केराक काँचे थम्ह हो
गुरुक श्रम सभ व्यर्थ, ज्ञानक दीप नहि लेसैत छै
नव सिखब, किछु नव करब, ई आगि नहि पजरैत छै
महकारीक फ'र विद्वत्- सभामे गोंग भए बैसैत छै।

सोचि लिय' अहँ की बनब निर्मूल्य, वा सुरभित सुमन
ज्योति बाँटब रविसदृश, तमप्रिय उलूकक वा शरण
म'न राखू जगतमे सभ किछु सभहक सुप्राप्य छै
बस परिश्रम एक नरकेँ, सुयश- पथ चलबैत छै।

स्त्रीसँ स्त्रीक गप

नहि बूझि पबै छी मिसियो भरि
कियै माइ एतेक निरुपाय बनलि
अछि लोभ मोन, वा लाथ कोनो
निज कुक्षि-संततिक काल बनलि !

नहि नीक लगै अछि रूप बहिन
ई विवश दीनता केर छाया
जे सहचर विवश करय, एहि हित
झट तोड़ि दियौ परिणय -माया !

स्मरण रहय बस एक कथा
छी सर्जक दिव्य युक्त ममता
सभ घात विपर्यय सहियो क'
नहि माइ तजै कखनहुँ गुरुता।

नहि छी अनाम, नहि गहु कुनाम
भय, ग्रन्थि मनक तत्क्षण तोड़ू
ओ बीति चुकल विकराल काल
सुत वा कि सुता भू पर आनू।

नहि दैन्य करी स्वीकार बहिन
नहि परिधि लिङ्ग अन्याय धरी
अधिकार तनक हमरहिं हाथेँ
कन्हा ने पुरुष बन्दूक धरी।

जँ ई विमर्श हो मनुष्यताक
जे दोखी, भागी ओ सजाक
शिक्षाक ज्योति किछु अर्थ रखत
आशाक सूर्य तखनहिँ विहुँसत।

हम व्यक्त कएल सुदृढ़ निज मत
नहि लेश भ्रान्ति, कनियो संशय
हँ, सत्य, भ्रूण एखनहुँ मरइछ
दौर्बल्य स्त्रीक कारण बनइछ।

जे काज स्वयं अछि करक बहिन
मुँहतक्की कहू अपेक्षित की ?
वैषम्य व्याप्त छै बहुत क्षेत्र,
समतल कए पथ सत्वर न बढ़ी ?

हम छी जनैत, हम छी मनैत
अग्निक धधरा क्षणभरिक नीक
धूँआ-धक्कर लय चिर जीयब
किञ्चित् ने काम्य, नहि लव अलीक।

अनुदान

चलि रहल बहुते घमर्थन, केन्द्रमे बस हम- अहाँ
कल्याण- गप जिह्वाग्रमे, बेवहारमे पायब कहाँ?
अनुदान केर अभिमान नभकेँ छूबि रहलै हे सखी !
देलनि जेना निज टेंटसँ, ई दंभ भेटत रहरहाँ।

धय कुण्डली सभ भाग पर, बैसल सहस्रो वर्षसँ
धर्मशास्त्रक व्याज, निज अधिकार केर आमर्षसँ
अवगति न बूझक धर्म की, लखि छी छगुन्तामे सखी !
हर्षित अपर केर कए दमन, केवल निजक उत्कर्षसँ।

देखू सगर की अहम् देखना जा रहल वागर्थमे
आधाक अधिकारीक छलना, दए तेहाई व्यर्थमे
एहि वाचनिक व्यामोहमे फँसि नहि उपकृत होउ सखी !
बूझू गुनू ई छद्म थिक, झाँपल बहुत अछि स्वार्थमे।

ई भेंट, ई अनुदान, आरक्षण सभहि बाधक बनत
निज श्रम कि मेधा आ लगन लक्ष्यक सबल साधक बनत
शिव-वक्ष पर स्थित कालिका केर शक्ति बिसरू नहि सखी !
दैन्य केर स्वीकृति, पराभव केर प्रबल वाहक बनत।

भ्रम एकटा अपनय होमय, रणभूमि नहि जीवन बुझू
नहि पुरुष केर स्पर्धाक हित नव-नव अहाँ उद्यम करू
विस्मृत करू त्रुटि विगतकालक, घुरि ओ ने आओत हे सखी !
शिक्षा, प्रगति संग प्रीति, समरसताक जल सिंचन करू।

ई पुरुष के, छथि ओ पिता पोषक, कि भ्राता स्नेहमय
प्रिय प्राण सम पति संग चलि प्रतिक्षण बनौलनि प्रेममय
ओ पुत्र कायज केन्द्रमे जक्कर खुशी, सदिखन सखी !
प्रतियोगिता नहि काम्य, सहयोगेँ बनत ई श्रेयमय।

छगुन्ता

अतल जलधि हम हेलि सकै छी
नबसिखुआ नित कहतै
पोखरि धरि सीमा छै जक्कर
कोना क' महिरम बुझतै।

अल्प ज्ञान घातक होइत अछि
अज्ञानोसँ बढ़ि बन्धु !
जिज्ञासा पर दम्भक दाबनि
नाहसँ टपतै सिन्धु !

ऊपर ऊपर हेलि
ओकर गहराइक वर्णन अहगर
घोंघा भेटब छै दुष्कर
मुक्तामणि-गाथा नमहर!

अधजल गगरी छलकि बनल अछि
बाटक पिच्छड़- कारण
नहि निपनौर ने नूरो गोबर
के नीपत ई आंगन ?

अभिव्यक्तिक तरुआरि ने सभतरि
ज्ञानक जँ हो म्यान
कोन विषय हम कोना उठाबी
एतबहु नहि अछि ध्यान !

‘आखर ब्रह्म’ बूझि सभामे
शब्दक न्यून प्रयोग
अपन ज्ञान, धन, शक्तिक सीमा
बूझि करी नित योग!

किन्तु बुझाबी ककरा,
नहि अछि लूरि ने कोनो ढंग
दुर्विदग्ध जे ज्ञानक लवसँ
निष्फल अजक प्रसंग !

पड़ल छगुन्ता म’न विकल अछि
चैन भेटत कोन आलय
कोना दियै उत्तर-प्रति-उत्तर
गहल मौन केर आश्रय।

खिस्सा

बाबी यै कनि पुरा काल केर
एक कथा रोचक कहियौ
कौरव पाण्डव वा लखन राम,
आरुणि अगस्त्य खेरहा बजियौ।

इतिहासक गप नहि आइ कहब
औ बाउ काल्पनिक कथा सुनू
जँ मन लागय, किछु तथ्य भेटय
थिर चित्त तखन सारांश गुनू।

सै लोक बसै छल एक गाम
सभ गुण वैभवमे बेश छलै
मन-ग्रन्थि मुदा किछु व्याप्त एहन
किंचित् नहि तोषक लेश छलै।

रत कठिन तपस्यामे जेठका
मनभाव छलै रविकेँ साधी
भए अति प्रसन्न मार्तण्ड आबि
'वर मांगू मनुसुत' की चाही ?

रविपुञ्ज देखि सुंदर ललाम
हे देव! दिनेश! अहीँ चाही
अपनहि सन अंशु प्रखर तमहर
हे अर्क! कृपा वृष्टिक कामी।

फँसि उहापोह दिनकर बजला
हे मनुज!मास तप करू आर
ता जग हित अपर व्यवस्था कए
तजि गगन उठायब अहँक भार।

लखि शशोपंजमे पड़ल भानु
नारद किछु कर्णविवर कहलनि
आदित्य रूप छाया बनाय
ओहि कठिन तपस्वी कर देलनि।

गर्वित प्रसन्न ओ घुरल गाम
खन उनटि पुनटि उपहार देखय
दुर्लभ धन पाबि विशिष्ट बनल
ओ आन जनक उपहास करय।

सूर्यक प्राप्तिक हित भेल विकल
क्रमशः सभ तप केर ढोंग करय
भेल एहन कि जे वर पाबि घुरय
अनका देखाय चित्त तोष गहय।

ग्रह नखत देवगण नभ ऊपर
विस्मित मनुसुत केर देखि हाल
नहि बुद्धि लेश, सीमाक ज्ञान
तैंयों बजबै अछि वृथा गाल।

की अरुण वस्तुत: थिक असली
यदि परिचय देबक हो खगता
प्राचीमे अबितहि जग भासित
गुण निचय सृष्टि कर्ता धर्ता।

की भेलै दाइ तक्खन कहियौ
की देव देल जनकेँ बुझाइ
औ बाउ बुझक गप की संभव
नरकेँ न परक गप छै सोहाइ।

की कहियह, मातल अहङ्कार
आंगुर पर गिरि, भ्रम साधिकार
हम सूर्य, इन्द्र हम वरुण अग्नि
भ्रममे जीबै अछि निराकार।

नहि सैयेटा पुनि बनि सहस्र
ओ लक्ष कोटि मुख निज श्लाघा
सुनि विकल सुधीजन, तैंयों की
साधंश थिकै क्यो दै बाधा ?

भेल कथा पूर्ण सूतह सत्वर
नहि आंखि निन्न प्रिय बाबी यै
यै दाइ, लगै मेहनति जतबो
अन्हरायल जाली कटबै यै।

बेन

हम देखि रहल छी बच्चेसँ
शुभ छलै बेन बिलहब सभ घर
क्यो रिक्त हस्त नहि अबै,
सनेसक छोट- पैघ मोटरी सभ कर
टिकरी कि पिरुकिया, अहिबक फर
गाजा खाजा होइ छलै बेन
केराक घौर छिमरी अथवा
दधि- माछो होइ छल लेन देन।

एतबहि नहि उपरान्त बलिक
माउसक प्रसाद कूड़ी लागय
काँचे प्रसाद घर- घर पहुँचय
भए मुदित घरैतिन सभ रान्हय
जे बेश हितू, जे आप्त अधिक
कूड़ी कनेक अहगर देखाय
किछु प्रश्न अवश्य अबै मनमे
नहि मुदा अनर्गल किछु बुझाय।

पोखरि खसैत छल जाल जखन
पीसथि सरिसव सभ घरक नारि
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
कहनहि छलाह पुरखा विचारि।
नहि शेष मुदा लव लेश भाव
गामक नगरक अछि एक हाल

घर वा कि हृदय केर बन्न द्वार
छुच्छे परञ्च बजबैछ गाल।

नहि किन्तु शेष संपूर्ण रूप
ई प्रथा नेने नव रूप आइ
संस्था हो प्रमुख कि छोटे हो
बेनक कूड़ी हित होइछ मारि
नहि कान, आइ देलियै ओकरा
देबौ तोरो, रखिहेँ भरोस
नहि विज्ञ अज्ञ अछि भेद एतय
परबाहि न किनकहु होनि रोष।

हम ठाढ़ि कोन धेने चुप मुँह
बजबै कोना, लागल बकौर
शीशाक राजमे आइ कहू
भेटतै कोना हीराक ठौर
चारू भर चीलक चांगुरमे
माँ सरस्वतीक की हाल हेतनि
'मूर्ख हस्त गताद् रक्ष' ई विकल
प्रार्थना के सुनतनि?

खंजर

टघरब निच्चाँ जलक प्रकृति थिक,
कत्तेक निच्चाँ के जानय
पतनशील मनुखक गति ओहने
तकर ममरखा के रोकय
मधुर पेय जल जलधिक संगमे
नोनछराइन, नहि पीबा जोग
किन्तु मधुर जलवाहिनि सरिता
संगम-व्याकुल, के रोकय?

स्वल्पो नहि आश्चर्य देखि कए
कत्तेक कारिख कक्कर चीर
कज्जल- सरमे म'न रमल अछि
ककरा चिंता ताकय तीर
किन्तु मूल्य केर विरुद गान सुनि,
हरिआइत छै सुखलो घाव
हन्त! नोन व्रण पर दय कहइछ
हरि लेबौ हम तोहर पीर।

पीबि पानि जकरा गरिआबी,
ओकरहि पथ पर चलितो छी
आंखिक पानि न किंचित् बाँचल
सभ अकृत्य अहाँ करितो छी
दूषित वृत्ति- प्रवृत्ति- पाशकेँ

काटि बढ़ल जे जाइत छल
हाय!जाल ओहि हाथें बिछबी
क्रान्ति दूत पुनि बनितो छी।

पसरल विष सगरो न दवाइक गोटी,
बैद बनै अछि के
रुदन अमंगल ई शृगाल केर,
भय भारी अछि, हरतै के
खंजर सभहक कर लखि कवि-मन
घायल बहुते, की सिरजू
देखि सकब प्रिय! सत्ते कहियौ,
घाव हृदय केर, सनल लहू ?

लघुदीप

प्रिय बात सुनी हम आइ सुधांशुक शरण अहाँ लेल किन्नहु नहि
भ्रम राखि कोनो उपवासक हित उद्विग्न होउ अहाँ किञ्चित् नहि
व्रत लेल एक ध्रुवतारा लखि, मम-परक भेद नहि परिणयमे
यश आयु वृद्धि जँ भेल अहँक, श्री हमर बढ़ैछ समुच्चयमे।

बरसाति होमय वा तीज कोनो सौभाग्य हमर बस ध्येय बनल
अहाँ रही जन्म- जन्मक संगी, दिशि उभय समर्पण प्रेय बनल
नहि बुझू कि हम छी ग्रस्त अहँक स्वार्थक साधक शास्त्रादि जाल
विश्वास हमर, निष्ठा अविचल, व्रत नियम श्रेय- विश्वास भाल !

औ पुत्र, अहूँ नहि भार लिय' खरजितिया वा कि अहोइक हित
सुख श्रेय कि आयुक काम अहँक मायक निज सुख केर विस्तृति थिक
ई प्रकृति सेहो थिक हमरे तेँ छठि चौरचन ब्याज सुरक्षण थिक
स्वत्वक सीमा हमरहि विशाल, ऊर्जाक प्राप्ति व्रत लक्षण थिक।

कल्याण होमय एहि सगर विश्व, हिंसा द्वेषक ई भाव जरै
भए जाइ विलोपित अहम्, वयम् भावक दिशि सबहक डेग बढ़ै
एहि तुमुल कलह कोलाहलमे, शान्तिक सात्विक शुभ शंख बजै
प्रिय, पुत्र, बन्धु व्रत नियम हमर लघुदीप अन्हरिया मध्य बरै।